हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय 2

परमेश्वर कैसे भिन्न है

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
पहचान....2
    बाइबल आधारित नींव....2
    धर्मवैज्ञानिक विविधता....4
        ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण....4
        बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण....4
        वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी....5
    बाइबल आधारित दृष्टिकोण....7
        ईश्वरीय उत्कृष्टता....7
        ईश्वरीय सर्वव्यापकता....12
एकीकरण....14
    बाइबल आधारित नींव....14
    धर्मवैज्ञानिक विविधता....16
        ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण....16
        बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण....17
        वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी....17
    बाइबल आधारित दृष्टिकोण....18
        अस्तित्व....18
        बुद्धि....19
        सामर्थ्य....20
        पवित्रता....22
        न्याय....23
        भलाई....24
        सत्य....26
उपसंहार....27

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

मुझे एक बार एक युवा व्यक्ति के बारे में बताया गया था जो अपने एक मित्र को शहर में एक नए संगीतकार को सुनने के लिए ले जा रहा था। उसने अपने साथी को आश्वस्त किया, "तुम इस व्यक्ति को पसंद करोगे।"

उसके मित्र ने पूछा, "वह किसके जैसा है?"

जवान व्यक्ति ने उत्साहपूर्ण आवाज़ में उत्तर दिया, "वह ऐसे किसी के जैसा नहीं है जिसे तुमने इससे पहले कभी सुना हो। तुम यह देखकर चकित रह जाओगे कि वह कितना भिन्न है।"

हम सब के पास ऐसे अनुभव रहे हैं। ऐसे कई तरीके हैं जिनमें जिन लोगों की हम प्रशंसा करते हैं वे दूसरों के जैसे ही होते हैं, परंतु ये समानताएँ सामान्यतः हमारे ध्यान को आकर्षित नहीं करती हैं। अक्सर जो बात हमें उनकी प्रशंसा करने के लिए उत्साहित करती है वह यह कि वे अन्य लोगों से कितने भिन्न हैं। और कई रूपों में, परमेश्वर पर भी यही बात लागू होती है। मसीह का प्रत्येक विश्वासयोग्य अनुयायी इस आधार पर परमेश्वर का सम्मान और उसकी आराधना करता है कि वह जो है और जो वह करता है। परंतु वह बात जो निरंतर हमारी आत्माओं को आश्चर्यचकित रूप में उत्साहित करती है वह यह है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से कितना महिमामय रूप में भिन्न है।

यह हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, इस श्रृंखला को हमने विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर की धर्मशिक्षा या परमेश्वर विज्ञान की खोज करने के लिए समर्पित किया है। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "परमेश्वर कैसे भिन्न है"। इस अध्याय में, हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिसे धर्मविज्ञानियों ने अक्सर परमेश्वर की अकथनीय विशेषताएँ कहा है, अर्थात् यह कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से कितना महिमामय रूप में भिन्न है।

अपने पिछले अध्याय में, हमने ईश्वरीय विशेषताओं की परिभाषा ऐसे दी थी :

> विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक प्रकटीकरणों के द्वारा प्रकट की गईं परमेश्वर के तत्व की सिद्धताएँ।

परमेश्वर की विशेषताएँ उसके सार के वे गुण हैं जिनके बिना वह परमेश्वर नहीं होगा।

हमने यह भी देखा था कि धर्मविज्ञानियों ने सामान्यतः परमेश्वर की विशेषताओं के दो मुख्य प्रकारों, या वर्गों के बारे में बात की है। उसकी कथनीय विशेषताएँ परमेश्वर के सार के वे गुण हैं जिन्हें सृष्टि के साथ सीमित रूपों में साझा किया गया है। उसकी अकथनीय विशेषताएँ परमेश्वर के सार के वे गुण हैं जिन्हें सृष्टि के साथ साझा नहीं किया जा सकता। इस अध्याय में, हम इन वर्गों के दूसरे वर्ग अर्थात् परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे - वह किस प्रकार अद्भुत रूप से सृष्टि से भिन्न है।

> जब हम इस विषय में बात करते हैं कि परमेश्वर कौन है और पवित्रशास्त्र हमारे समक्ष क्या प्रकट करता है कि परमेश्वर कौन है – जिसे लोग परमेश्वर की विशेषताएँ कहते हैं – तो लोग उन्हें कथनीय, अर्थात् हमारे जैसी बातों, या अकथनीय, अर्थात् हमारे और परमेश्वर के बीच भिन्न बातों में विभाजित करते हैं . . . यह भिन्नता क्यों महत्वपूर्ण है? यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस बात को समझने में हमारी सहायता करती है कि परमेश्वर कौन है - भिन्न रूप में

> परमेश्वर . . . यदि हम “स्वयंभूति” जैसे शब्द के बारे में सोचें जिसका अर्थ है कि परमेश्वर केवल स्वयं को अस्तित्व में रखने के द्वारा ही अस्तित्व में है। दूसरे शब्दों में, वह किसी पर निर्भर नहीं है; जबकि हम अपने अस्तित्व के लिए उस पर निर्भर हैं - यह ऐसी बात है जो हमें बताती है कि हम कौन हैं और परमेश्वर कौन है, के बीच एक भिन्न बात है। इसलिए, अकथनीय और कथनीय विशेषताओं के बीच की भिन्नता हमें न केवल यह जानने में सहायता करती है कि परमेश्वर कौन है, बल्कि यह जानने में भी सहायता करती है कि कैसे परमेश्वर परमेश्वर है और हम नहीं है।
>
> - विन्सेंट बाकोटे, **Ph.D.**

विशेषताओं पर आधारित हमारा यह अध्याय जो यह प्रकट करता है कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है, दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम पहचान की प्रक्रिया को देखेंगे, अर्थात् कैसे हमें परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को पहचानना और परिभाषित करना चाहिए। और दूसरा, हम एकीकरण की प्रक्रिया को खोजेंगे, अर्थात् कैसे हमें परमेश्वर की अन्य सिद्धताओं की अपनी समझ के साथ ईश्वरीय विशेषताओं के इस समूह के विषय में हमारी मान्यताओं को एकीकृत करना चाहिए। आइए परमेश्वर की अकथनीय सिद्धताओं की पहचान के साथ आरंभ करें।

पहचान

इन ईश्वरीय विशेषताओं की पहचान का अध्ययन करने के कई तरीके हैं। परंतु समय की कमी के कारण, हम केवल तीन मुख्य विषयों को ही देखेंगे। पहला, हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बाइबल आधारित नींव को देखेंगे। दूसरा, हम इन विषयों पर सुसमाचारिक लोगों के बीच धर्मवैज्ञानिक विविधता पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम बाइबल आधारित ऐसे दृष्टिकोणों की विशालता पर ध्यान देंगे जिन्हें हमें तब सामने रखना आवश्यक होता है जब हम परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को परिभाषित करते हैं। आइए इन ईश्वरीय सिद्धताओं को पहचानने के लिए बाइबल आधारित नींव को देखें।

बाइबल आधारित नींव

सामान्य प्रकाशन हमें तब परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं में बहुत सी अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है जब हम परमेश्वर के सार की योग्यताओं और उसकी सृष्टि की योग्यताओं के बीच विपरीतता दर्शाते हैं। मध्यकालीन विद्वानों ने इस रणनीति को “वाया निगेशनिस” या “निषेध का तरीका” कहा था। परंतु, जैसा हमने देखा है संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर ने हमारे मार्गदर्शन के लिए अपने लोगों को विशेष प्रकाशन दिया जब हम सामान्य प्रकाशन पर चिंतन करते हैं। और मसीह के आज के अनुयायियों के लिए इसका अर्थ यह है कि हमें इन विषयों के बारे में बाइबल आधारित शिक्षाओं की नींव पर आधारित होने के लिए सब कुछ करना चाहिए।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया है, धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन अवधियों में, परमेश्वर विज्ञान यूनानी दर्शनशास्त्र की परमेश्वर की धारणाओं से बहुत अधिक प्रभावित था। यूनानी दर्शनशास्त्र ने बल दिया था कि परमेश्वर ज्ञानातीत है, इसलिए इतिहास से पूरी तरह से परे है। इस प्रभाव के अधीन, मसीही धर्मविज्ञानियों ने पवित्रशास्त्र के लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर परमेश्वर की अकथनीय

विशेषताओं को पहचाना। परंतु, आधुनिक समय में, कई प्रभावशाली आलोचनात्मक धर्मविज्ञानी और यहाँ तक कि कई सुसमाचारिक लोग इन यूनानी प्रभावों से फिर गए हैं। परमेश्वर की ज्ञानातीतता पर बल देने की अपेक्षा, उन्होंने परमेश्वर की सर्वव्यापकता, अर्थात् इतिहास में उसकी सहभागिता पर ध्यान केंद्रित किया है। और इसी कारण से, बहुत से अच्छे मसीहियों के लिए सामान्य बात है कि वे इस बात को कम आंकें या फिर इसका इनकार ही कर दें कि बाइबल परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की पारंपरिक धर्मशिक्षा का समर्थन करती है। इन विषयों के बारे में संदेहों के कारण, यह परमेश्वर के विषय में ऐसे मूल दृष्टिकोण की ओर संकेत करने में सहायता करेगा जो पवित्रशास्त्र में पाया जाता है। यहाँ हमारे मन में यह है कि कैसे अक्सर बाइबल के लेखकों और पात्रों ने इस सच्चाई को दर्शाया कि परमेश्वर अतुलनीय है, अर्थात् वह बेजोड़; बिना किसी बराबरी के; सर्वोच्च है। उदाहरण के लिए, 1 राजाओं 8:23 में सुलैमान ने मंदिर के समर्पण के समय इस प्रकार परमेश्वर की स्तुति की :

> हे इस्राएल के परमेश्वर! तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में, और न नीचे पृथ्वी पर कोई ईश्वर है। (1 राजाओं 8:23)

ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर की अतुलनीयता के विषय में सुलैमान की घोषणा बिना किसी अपवाद के है। [परमेश्वर] के "समान न तो स्वर्ग में, और न नीचे पृथ्वी पर" कोई परमेश्वर है। हम ऐसी ही घोषणा भजन 71:19; भजन 86:8; और भजन 89:6 में पाते हैं। और 2 शमूएल 7:22 में दाऊद ने यह कहा :

> हे यहोवा परमेश्वर, तू महान् है; क्योंकि जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कौन है, और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है (2 शमूएल 7:22)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, दाऊद ने परमेश्वर की अतुलनीयता के बारे में इस रीति से कहा है जिसने यह प्रकट किया कि परमेश्वर होने का वास्तव में क्या अर्थ है। दाऊद ने कहा कि परमेश्वर महान है और [उसके] जैसा कोई भी नहीं [है]। परंतु उसने यह भी दावा किया कि वह सर्वोच्च प्रभु - "यहोवा परमेश्वर" या इब्रानी भाषा में अदोनाई याहवे (יהוה אֲדֹנָי) इतना महान है कि [परमेश्वर] को छोड़ कोई और परमेश्वर नहीं है। ऐसा कहने के द्वारा दाऊद ने यह प्रकट किया कि परमेश्वर की अतुलनीयता उसके लिए बहुत आवश्यक है जो परमेश्वर को परमेश्वर बनाती है। यशायाह 40-46 और अय्यूब 40-41 लगभग यही करते हैं।

ये और इन जैसे कई अन्य अनुच्छेद इस बाइबल आधारित नींव की स्थापना करते हैं जो परमेश्वर की अकथनीय सिद्धताओं के गहन अध्ययन को न्यायसंगत ठहराती है। ये पद इस नियमित बाइबल आधारित शिक्षा को दर्शाते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ सभी तरह की तुलनाओं से परे है। ऐसे समय में जब परमेश्वर विज्ञान के इस पहलू पर कुछ अध्ययन क्षेत्रों में संदेह किया जाता है, और अन्य क्षेत्रों में इसे नाटकीय तरीके से कमजोर कर दिया जाता है, फिर भी पवित्रशास्त्र निरंतर परमेश्वर की अतुलनीयता को प्रकाशित कर रहा है। और उसकी अतुलनीयता हमें उस सब को सीखने के लिए बुलाती है कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है।

परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की पहचान के लिए बाइबल आधारित नींव पर ध्यान देने के बाद, हमें दूसरे विषय अर्थात् उस धर्मवैज्ञानिक विविधता की ओर मुड़ना चाहिए जो इन विषयों पर सुसमाचारिक लोगों के बीच पाई जाती है

धर्मवैज्ञानिक विविधता

पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की कोई पूर्ण, अधिकारिक सूची तक प्रदान नहीं करता है। इसकी अपेक्षा, इन विषयों पर बाइबल आधारित शिक्षाएँ अलग-अलग स्थानों पर इस या उस रूप में प्रकट होती हैं। इस कारण, इन ईश्वरीय सिद्धताओं को पहचानना ऐसी आकृतियों और प्रकारों से रंगीन काँच की जटिल खिड़की की रचना करने के समान है जो बाइबल के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं। जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं, ऐसी कई जटिल प्रक्रियाएँ हैं जो इन आकृतियों और रंगों को पहचानने और संश्लेषित करने तथा सूचीबद्ध करने में पाई जाती हैं। अतः यद्यपि हमारे कई दृष्टिकोण एक जैसे हैं, फिर भी हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए कि सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की भिन्न-भिन्न सूचियों की रचना की है।

हम कई तरीकों से इस धर्मवैज्ञानिक विविधता के भाव को प्राप्त कर सकते हैं। परंतु सुविधा के लिए, आइए प्रोटेस्टैंट कलीसिया की विभिन्न शाखाओं के तीन ऐतिहासिक प्रलेखों को देखें। पहला, हम ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण की समीक्षा करेंगे, दूसरा, हम बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी को देखेंगे। आइए पहले 1530 में लिखे हुए ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण की ओर मुड़ें।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण

हमारे पिछले अध्याय में हमने ध्यान दिया था कि लूथरनऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण का पहला सूत्र परमेश्वर की विशेषताओं को इस प्रकार सारगर्भित करता है :

> एक ईश्वरीय सार है जिसे परमेश्वर कहा जाता है और जो परमेश्वर है : अनंत, शरीर रहित, अंग रहित, असीमित सामर्थ्य, ज्ञान, और भलाई के साथ।

जैसा कि हम देख सकते हैं, यह सूत्र छह ईश्वरीय सिद्धताओं के बारे में बात करता है। यद्यपि यह अत्यधिक सरलीकरण है, फिर भी सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई जैसे शब्दों को परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं के साथ जोड़ना सामान्य बात रही है। ये वे विशेषताएँ हैं जिन्हें उसकी सृष्टि, और विशेषकर मनुष्यजाति, सृष्टिगत स्तर पर साझा करती है। और अनंत, शरीर रहित, अंग रहित और शब्द असीमित को परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के साथ जोड़ना भी सामान्य रहा है। ये वे तरीके हैं जिसमें परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण में सूचीबद्ध अकथनीय विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, आइए 1561 में लिखित रिफोर्मड बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण की ओर मुड़ने के द्वारा सुसमाचारिक लोगों में प्रचलित धर्मवैज्ञानिक विविधता को देखें।

बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण

बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण के पहले सूत्र में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> केवल एक ही सरल और आत्मिक अस्तित्व है जिसे हम परमेश्वर कहते हैं . . . वह अनंत, अबोधगम्य, अदृश्य, अपरिवर्तनीय, असीमित, सर्वशक्तिमान, सिद्ध रूप से बुद्धिमान, न्यायी, भला, और संपूर्ण भलाई का उमड़ता हुआ सोता है।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, इस बात पर ध्यान देने के साथ-साथ कि परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व है, यूहन्ना 4:24 में यीशु के कहे हुए शब्दों पर आधारित, बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण परमेश्वर का वर्णन दस अन्य शब्दों के साथ करता है। एक बार फिर से, यह अत्यधिक सरलीकरण है, परंतु कुल

मिलाकर, धर्मविज्ञानियों ने सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान, न्यायी और भले की उपाधियों के साथ कथनीय विशेषताओं के रूप में व्यवहार किया है, क्योंकि हम सामर्थ्य, बुद्धि, न्याय और भलाई को परमेश्वर के साथ रचे गए प्राणियों के स्तर पर साझा करते हैं। शब्द सरल — जिसका अर्थ है कि परमेश्वर को भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता — अनंत, अबोधगम्य — जिसका अर्थ है कि हम परमेश्वर के बारे में पूरी तरह से कुछ नहीं समझ सकते — अदृश्य, अपरिवर्तनीय — या न बदलने वाला — और असीमित को अक्सर परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के उल्लेखों के रूप में लिया जाता रहा है।

परमेश्वर की विशेषताओं को पहचानने में शामिल धर्मवैज्ञानिक विविधता पर आधारित हमारे विचार विमर्श में, हमने यह देखा है कि कैसे ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण और बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं। आइए, अब हम 1647 में लिखित अपने तीसरे महत्वपूर्ण प्रलेख प्योरिटन वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी की ओर मुड़ें।

वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी

वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न और उत्तर संख्या 4 कुछ इस तरह से है :

> परमेश्वर क्या है?

प्रश्नोत्तरी का उत्तर है :

> परमेश्वर एक आत्मा, असीमित, अनंत है और अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य में अपरिवर्तनीय है।

परमेश्वर का एक आत्मा के रूप में वर्णन करने के बाद, लघु प्रश्नोत्तरी दस ईश्वरीय सिद्धताओं को दर्शाती है। एक बार फिर से, हम इसे बाद में देखेंगे कि ये विषय जटिल हैं, परंतु अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य के विषय में कथनीय विशेषताओं के रूप में बात करना सामान्य बात है। और साथ ही असीमित, अनंत, और अपरिवर्तनीय या न बदलनेवाली विशेषताओं को परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के साथ पहचानना भी सामान्य है।

जब हम परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की इन सूचियों को एक दूसरे के साथ रख देते हैं, तो हम देखते हैं कि वह एक जैसी नहीं हैं। तीनों प्रलेख उल्लेख करते हैं कि परमेश्वर अनंत और असीमित है। परंतु केवल बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण औरवेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी कहते हैं कि परमेश्वर आत्मिक अस्तित्व या एक आत्मा है, और यह कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय या न बदलनेवाला है। केवल ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण दावा करता है कि परमेश्वर देह रहित और अंग रहित है। और केवल बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण कहता है कि परमेश्वर सरल, अबोधगम्य और अदृश्य है।

जैसा कि हम इन तुलनाओं से देख सकते हैं, सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया है। परंतु ये सूचियाँ कितनी महत्वपूर्ण भिन्नताओं को दर्शाती हैं?

जब धर्मविज्ञान के विद्यार्थी सबसे पहले यह सीखते हैं कि सभी सुसमाचारवादी परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के लिए समान शब्दावली का प्रयोग नहीं करते हैं, तो वे अक्सर अनुमान लगाते हैं कि हम परमेश्वर के बारे में विभिन्न बातों पर विश्वास करते हैं। जैसा कि विधिवत धर्मविज्ञान के प्रत्येक पहलू में होता है, यह सत्य है कि हमारे बीच की विविधताएँ अक्सर विभिन्न धर्मवैज्ञानिक प्रभावों को प्रस्तुत करती हैं। परंतु अधिकतर, परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की हमारी सूचियाँ शब्दावली की भिन्नता से अधिक कुछ प्रस्तुत नहीं करतीं। हम विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करने की श्रृंखला में तकनीकी शब्दों पर कुछ विस्तार से बात करते हैं। अतः यहाँ केवल इस सरल बिंदु को रखना पर्याप्त होगा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

: यद्यपि मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों ने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को दर्शाने में विभिन्न तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया है, फिर भी कुल मिलाकर, ये सूचियाँ परमेश्वर के बारे में हमारी धारणाओं या मान्यताओं में बड़े अंतरों को प्रस्तुत नहीं करती हैं।

जैसा कि हमने अभी ध्यान दिया है, ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण उल्लेख करता है कि परमेश्वर देह रहित है। यद्यपि बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण और वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी इस अभिव्यक्ति का प्रयोग नहीं करते हैं, फिर भी वे उसी मान्यता या धारणा को दर्शाते हैं। बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण इसे तब दर्शाता है जब वह कहता है कि परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व और अदृश्य है। और वेस्टमिंस्टर पुष्टि करता है कि परमेश्वर एक आत्मा है, और इसलिए, देह रहित है।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण यह भी कहता है कि परमेश्वर अंग रहित है। और बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण इसी बात को तब कहता है जब वह परमेश्वर का वर्णन सरल के रूप में करता है। जैसा कि हमने पहले कहा था, "सरल" कहना "अविभाजित" या "अंग रहित" कहने का एक पुराना तरीका है। वेस्टमिंस्टर इस विशेषता को तब दर्शाता है जब वह कहता है कि परमेश्वर असीमित है। उसके कोई अंग नहीं हैं क्योंकि उसकी सिद्धताओं की कोई सीमा नहीं है।

इसी प्रकार, केवल बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण कहता है कि परमेश्वर अबोधगम्य है। परंतु ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण और वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी इस ईश्वरीय विशेषता को शब्द असीमित के अपने प्रयोग के द्वारा दर्शाते हैं। क्योंकि परमेश्वर का मन बिना किसी सीमा के है, हम उसे समझ नहीं सकते हैं।

स्पष्ट है कि धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को विभिन्न तरीकों से सूचीबद्ध किया है। परंतु, जैसा कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर के बारे में हमारी धारणाएँ बहुत अधिक भिन्न नहीं हैं। इसलिए, हमें सदैव विशेष रूप से तकनीकी शब्दों से परे होकर देखना चाहिए और उन धारणाओं या मान्यताओं पर ध्यान देना चाहिए जिन्हें वे दर्शाते हैं।

> जब धर्मविज्ञानी अपना कार्य करते हैं, या जब कुछ विश्वासी भी एकत्र होकर कलीसिया को प्रदान करने के लिए, कलीसिया की मान्यताओं और उसके धर्मविज्ञान का वर्णन करने के लिए अंगीकरणों की रचना करने का प्रयास करते हैं, तो उन सभी विषयों में आप उसी वास्तविकता का वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं, यदि लोग वास्तव में सहमत हो जाते हैं। परंतु वे भिन्न-भिन्न विकल्पों को चुन सकते हैं। यदि हमें परमेश्वर के विवरण के बारे में सोचना हो, अर्थात्, हम समझते हैं कि, परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में एक अस्तित्व है, परंतु फिर भी परमेश्वर एक है। और फिर भी परमेश्वर की विभिन्न विशेषताएँ हैं . . . इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यदि हम किसी विषय पर बात करना आरंभ करें जो कि इतनी गहन और इतनी महत्वपूर्ण हो कि हम उसके लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग करें . . . हमें यह खोजने का प्रयास करना चाहिए कि उसके नीचे क्या छिपा हुआ है जिसका वर्णन करने का प्रयास शब्द कर रहे हैं और उन बातों की तुलना करने का प्रयास करना चाहिए। और भी अधिक असमंजसपूर्ण यह हो सकता है जब दो भिन्न समूहों के लोग दो बहुत ही भिन्न बातों का वर्णन करने के लिए समान शब्द का प्रयोग करते हैं। और फिर हमें यह समझना होगा कि हम शब्दों को एक दूसरे के आगे पीछे नहीं रख सकते। हमें यह पता लगाने के लिए शब्दों की पृष्ठभूमि को खोजने का प्रयास करना होगा कि वे धर्मविज्ञानी, इन अंगीकरणों के वे लेखक, क्या स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, और हमें उसे लेने में सक्षम होना होगा जो इसके पीछे छिपा हुआ है, और उसकी तुलना करके यह देखने में सक्षम होना

> होगा कि कहाँ भिन्नता है और कहाँ नहीं है। और अक्सर जब हम उस कार्य को करते हैं तो हम पाते हैं कि उसमें हमारी सोच से कम भिन्नता है क्योंकि वे अभी भी ऐसे अंगीकरण हैं जो पवित्रशास्त्र के अधिकार और मसीह के कार्य पर आधारित हैं। और इसलिए यदि वे एक ही वास्तविकता का वर्णन करने के लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग भी करते हैं, तो भी यह वही वास्तविकता है जिसका लक्ष्य उन्होंने रखा है।— **Dr. Tim Sansbury**
>
> - डॉ. टिम सैंसबरी

यह विशेष रूप से अति महत्वपूर्ण है जब हम यह अनुभव करते हैं कि इन विशेषताओं के लिए अन्य शब्दों का प्रयोग आम तौर पर किया गया है। उदाहरण के लिए, सुसमाचारवादी आम तौर पर परमेश्वर की सर्वविद्यमानता, अर्थात् परमेश्वर के सब स्थानों पर विद्यमान होने के तथ्य; परमेश्वर की सर्वज्ञानता, अर्थात् यह तथ्य कि वह सब कुछ जानता है; और परमेश्वर की सर्वसामर्थ्य, अर्थात यह तथ्य कि परमेश्वर सर्वसामर्थी है, को आम तौर पर दर्शाते हैं। बहुत से धर्मविज्ञानी परमेश्वर के स्वयंभूति होने के विषय में भी बात करते हैं, अर्थात् यह तथ्य कि परमेश्वर आत्म-निर्भर और अपनी सृष्टि से स्वतंत्र है; और परमेश्वर की सर्वोच्चता, अर्थात् यह तथ्य कि परमेश्वर का सृष्टि पर संपूर्ण नियंत्रण है। यह अवश्य है कि इन धर्मशिक्षाओं के कुछ विवरणों में असहमति पाई जाती है। परंतु, कुल मिलाकर, शब्दावली में भिन्नता सुसमाचारिक धर्मविज्ञानियों के बीच विचारों की मुख्य भिन्नताओं को प्रस्तुत नहीं करती है।

अब जबकि हमने यह पहचानने के लिए कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है, बाइबल आधारित नींव और और सुसमाचारिक लोगों में परमेश्वर की धर्मशिक्षा के इस पहलू में धर्मवैज्ञानिक विविधता पर विचार कर लिया है, इसलिए हमें बाइबल आधारित विस्तृत दृष्टिकोणों पर ध्यान देना चाहिए जो और अधिक रूप में इन ईश्वरीय सिद्धताओं को परिभाषित करने में हमारी सहायता करते हैं।

बाइबल आधारित दृष्टिकोण

परमेश्वर अपनी सृष्टि से कैसे भिन्न है, इसका वर्णन करने के लिए शब्दों की एक सूची को तैयार करना एक बात है। वहीं इन शब्दों को पवित्रशास्त्र की कई प्रासंगिक शिक्षाओं के साथ पहचानना एक अलग बात है। परमेश्वर की अकथनीय विशेषताएँ मसीही धर्मविज्ञान की कुछ सबसे अमूर्त धारणाएँ हैं। फलस्वरूप, जब यह निर्धारित करना होता है कि इन शब्दों के अर्थ क्या हैं, तो मसीही अक्सर बहुत आगे बढ़ जाते हैं। जैसा कि हम देखने वाले हैं, यदि हम उसकी अकथनीय विशेषताओं के प्रति गंभीर गलतफ़हमियों से बचने की आशा करते हैं तो हमें परमेश्वर के बारे में बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के एक विस्तृत कार्यक्षेत्र को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की उस विशालता को देखने के लिए जिसे हमें सैदव ध्यान में रखना चाहिए, हम दो दिशाओं की ओर देखेंगे। पहली, हम देखेंगे कि परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए पवित्रशास्त्र किस प्रकार ईश्वरीय उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित करता है। और दूसरा, हम खोज करेंगे कि पवित्रशास्त्र ईश्वरीय सर्वव्यापकता के बारे में क्या सिखाता है। आइए सबसे पहले हम ईश्वरीय उत्कृष्टता पर बाइबल की शिक्षाओं को देखें।

ईश्वरीय उत्कृष्टता

> उत्कृष्टता में यह धारणा ऊपर की है, ऊपर और परे की है, इसलिए जब हम परमेश्वर की उत्कृष्टता के बारे में बात करते हैं तो हम यह कह रहे हैं वह है – एक

> भाव में, यह चित्रित भाषा है – हम उस रूप में कह रहे हैं जिसमें हम परमेश्वर के बारे में सोचते हैं, हमें परमेश्वर के बारे में ऐसे सोचना चाहिए कि वह बहुत बड़ा है और मनुष्य से ऊँचा है। अतः परमेश्वर की उत्कृष्टता, या ईश्वरीय उत्कृष्टता के बारे में बात करने का अर्थ परमेश्वर का वर्णन वास्तव में परमेश्वर के रूप में, अर्थात् उसकी अपनी प्रकृति में करना है . . . न किसी ऐसी मूर्ती या देवता के रूप में जिसे मनुष्यों के द्वारा गढ़ा गया हो या जादुई रूप में प्रकट किया गया हो, बल्कि परमेश्वर के रूप में। और इसलिए परमेश्वर कौन है, इसके बारे में सोचना वास्तव में यह स्वीकार करना है कि वह वास्तव में परमेश्वर है, और इसलिए आराधना के योग्य है . . . यशायाह : "पवित्र, पवित्र," यह महान, विशाल परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, समय और स्थान का स्वामी, अपनी सृष्टि से ऊँचा और परे, और मनुष्य के हेरफेर से ऊँचा और परे है – उत्कृष्ट है। परमेश्वर अपने स्वयं की निहित प्रकृति में है।
>
> - डॉ. जोश मूडी

सरल शब्दों में कहें तो, जब हम "ईश्वरीय उत्कृष्टता" के बारे में बात करते हैं, तो हमारा अर्थ यह है कि परमेश्वर उन सीमितताओं से बंधा हुआ नहीं जो उसने अपनी सृष्टि के लिए स्थापित की हैं। वह सृष्टि से ऊपर और परे है। परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की प्रत्येक सूची उस पर आधारित है जो बाइबल परमेश्वर की उत्कृष्टता के बारे में सिखाती है। परंतु समय और सरलता के कारण, हम अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न 4 की खोज करेंगे।

लघु प्रश्नोत्तरी तीन अकथनीय सिद्धताओं को दर्शाने के द्वारा ईश्वरीय उत्कृष्टता के बारे में बात करती है। यह हमें बताती है कि परमेश्वर असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है। आइए पहले यह देखें कि कैसे पवित्रशास्त्र यह सिखाता है कि परमेश्वर असीमित है।

असीमित। बहुत से मसीही यह जानकार चकित हो जाते हैं कि शब्द "असीमित" बाइबल में नहीं पाया जाता है। इसकी अपेक्षा, यह ऐसी धारणा के लिए एक दार्शनिक तकनीकी शब्द है जो संपूर्ण पवित्रशात्र में विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। अंग्रेज़ी में, हम अक्सर शब्द "असीमित" या इनफाइनाईट का अनुवाद दो लैटिन धर्मवैज्ञानिक शब्दों से करते हैं। पहला है इमैनसुस, जिसका अर्थ है "अथाह" या "असंख्य"। दूसरा है इनफिनीटिस, जिसका अर्थ "अंतहीन" या "असीमित" है। अतः जब हम कहते हैं कि परमेश्वर असीमित है, तो हमारा अर्थ है कि परमेश्वर अपनी सीमित सृष्टि के विपरीत है। वह अथाह, असंख्य, अंतहीन और असीमित है। सरल शब्दों में कहें तो : परमेश्वर की सिद्धताएँ सीमा रहित हैं।

बाइबल के कई अनुच्छेद स्पष्ट रूप से ऐसे विभिन्न तरीकों को दर्शाते हैं जिनमें परमेश्वर असीमित है। उदाहरण के लिए, 1 राजाओं 8:27 में सुलैमान ने तब यह दर्शाया कि परमेश्वर को स्थान में सीमित नहीं किया जा सकता जब उसने परमेश्वर के प्रति यह घोषणा की कि "स्वर्ग में वरन् सब से ऊँचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता।" और रोमियों 11:33 में पौलुस ने तब यह दर्शाया कि परमेश्वर की बुद्धि को नापा नहीं जा सकता जब उसने परमेश्वर के "न पाए जाने वाले . . . न्याय, और . . . मार्ग" जो कि "अगम हैं" के बारे में बात की। और, जैसा कि भजनकार भजन 139:6 में लिखता है, परमेश्वर इतना महान है कि उसका ज्ञान "बहुत कठिन...गंभीर... समझ से परे है।" ये और ऐसे ही अन्य अनुच्छेद दर्शाते हैं कि परमेश्वर को उसकी सिद्धताओं में असीमित कहना उचित है।

> परमेश्वर की असीमितता परमेश्वर के असीमित होने के विषय में बात करने का एक तरीका है। हम समय और स्थान के नियामकों में रहते हैं। हमारे जीवनों में एक उन्नति पाई जाती है जो समय में और स्थान में घटित होती है। उन दोनों नियामकों

> के बारे में भी काल्पनिक रूप में बात करना कठिन है। और इसलिए, जब हम परमेश्वर की असीमितता के बारे में बात करते हैं, तो हम यह स्पष्ट करने, और कहने का प्रयास कर रहे हैं कि परमेश्वर वैसे सीमित नहीं है जैसे कि हम स्थान और समय में सीमित हैं। अतः परमेश्वर का अस्थाई अस्तित्व, या आकाशीय अस्तित्व, एक तरह से श्रेणियों का दुरूपयोग है। एक भाव में परमेश्वर — एक बार फिर से हम एक ऐसे अनुभव के बारे में बात करने के लिए भाषा का प्रयोग कर रहे हैं जो हमारे अनुभव से परे है — समय से परे है, परंतु फिर भी हम समय के बारे में बात करने के लिए आकाशीय भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। अतः परमेश्वर की असीमितता के बारे में बात करने का अर्थ है कि परमेश्वर उन रूपों में सीमित नहीं है जिनमें हम सीमित हैं।
>
> - डॉ. रिचर्ड लिंट्स

ऐसे तरीकों को प्रकट करने के द्वारा ईश्वरीय उत्कृष्टता की पुष्टि करने के अतिरिक्त कि परमेश्वर असीमित है, पवित्रशास्त्र इस अमूर्त विचार को भी प्रत्यक्ष रूप से दर्शाता है कि परमेश्वर अनंत है।

अनंत। हमारे हिन्दी शब्द “अनंत” का प्रयोग अक्सर पुराने नियम में बाइबल के शब्द “एड” עַד)),”औलाम” (עוֹלָם) और कभी कभी “नासाख़” (נֵצַח) का अनुवाद करने में किया जाता है, और “आयोन” (αἰών) तथा “आयोनिओस” (αἰώνιος) का प्रयोग पुराने नियम के यूनानी अनुवाद – या सेप्तुआजिन्त और नए नियम में किया जाता है। निस्संदेह इन शब्दों को सृष्टि के पहलूओं पर भी लागू किया जाता है, परंतु उसी भाव में नहीं जिसमें उन्हें परमेश्वर पर लागू किया जाता है। सृष्टि अस्थाई है, और कई रूपों में समय के द्वारा सीमित है। परंतु परमेश्वर ऐसा नहीं है, परमेश्वर इस भाव में अनंत है कि परमेश्वर की सिद्धताएँ समय के अधीन नहीं हैं।

बाइबल के कई अनुच्छेद परमेश्वर की अनंतता के विभिन्न आयामों के बारे में बात करते हैं। उदाहरण के लिए 1 तीमुथियुस 1:17 परमेश्वर को सनातन राजा के रूप में कहता है। वह कहता है, “अब सनातन राजा . . . एकमात्र परमेश्वर का आदर और महिमा युगानयुग होती रहे।” प्रकाशितवाक्य 4:8 अनंत के रूप में परमेश्वर की स्तुति करता है जब स्वर्गीय प्राणी उसे यह कहते हैं “जो था और जो है और जो आने वाला है।” और 2 पतरस 3:8 बताता है कि कैसे परमेश्वर संपूर्ण इतिहास से उत्कृष्ट है जब वह कहता है, “प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर हैं।” ये और इन जैसे कई अन्य अनुच्छेद स्पष्ट कर देते हैं कि परमेश्वर की सिद्धताएँ अनंत हैं।

> बाइबल अक्सर परमेश्वर के अनंत होने के बारे में बात करती है। इसका अर्थ है सनातन से सनातन तक, अतः ऐसा कोई आरंभ नहीं था जब परमेश्वर नहीं था, या जब परमेश्वर का अस्तित्व नहीं था। सृष्टि अनंत नहीं है। सृष्टि का एक आरंभ था। संपूर्ण ब्रह्मांड का एक आरंभ था। परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शून्य से की। परंतु परमेश्वर का कोई आरंभ नहीं है। परमेश्वर सनातनकाल से है और परमेश्वर सदा से परमेश्वर है, अतः सनातन से सनातन तक है। और इसलिए “अनंत” यह दर्शाएगा कि वह सनातन से सनातन तक है। ऐसा कोई समय नहीं है जब परमेश्वर का अस्तित्व नहीं होता, चाहे यह भूतकाल में या भविष्य में।
>
> - रेव्ह. डॉ. पॉल आर. राबे

पवित्रशास्त्र न केवल परमेश्वर को असीमित और अनंत के रूप में स्थापित करने के द्वारा ईश्वरीय उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है, बल्कि वह स्पष्ट रूप से यह भी दर्शाता है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है।

अपरिवर्तनीय। बाइबल में ऐसी कई अभिव्यक्तियाँ हैं जो दर्शाती हैं कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है। इब्रानी क्रिया "शानाह" שָׁנָה)) का अर्थ है "बदल जाना"। क्रिया "नाखाम" נָחַם)) का अर्थ है "किसी के मन को बदलना"। और नए नियम की यूनानी संज्ञा "पारालागे" (παραλλαγή) का अर्थ है "परिवर्तन" या "बदलाव"। सामान्य अनुभव और बाइबल स्पष्ट कर देते हैं कि सृष्टि की सब बातें, किसी न किसी स्तर पर, परिवर्तनीय हैं। परंतु जब इन शब्दों को परमेश्वर पर लागू किया जाता है, तो वे एक अन्य तरीके के बारे में बात करते हैं जिसमें परमेश्वर अपनी सृष्टि से अद्‌भुत रूप से भिन्न है। बाइबल के अनुसार परमेश्वर की सिद्धताएँ कभी नहीं बदल सकतीं।

मलाकी 3:6 में स्वयं परमेश्वर ने बिलकुल स्पष्ट शब्दों में कहा है कि वह अपरिवर्तनीय है। इस पद में उसने यह कहते हुए अपनी स्थिरता और इस्राएल के समर्पण की अस्थिरता के बीच विपरीतता प्रकट की कि, "मैं यहोवा बदलता नहीं।" गिनती 23:19 यह कहते हुए परमेश्वर की मनुष्य के साथ विपरीतता को दर्शाता है, परमेश्वर "मनुष्य नहीं . . . कि अपनी इच्छा बदले।" और याकूब 1:17 में याकूब ने परमेश्वर का वर्णन "ज्योतियों का पिता, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" के रूप में करने के द्वारा अपने पाठकों को परमेश्वर की स्थिरता के प्रति आश्वस्त किया। ये और इन जैसे अन्य अनुच्छेद परमेश्वर को ऐसे दर्शाते हैं जो अपरिवर्तनीय या न बदलने वाला है।

> परमेश्वर नहीं बदलता, और यह बात सीधे बाइबल के कई स्थानों से आती है, परंतु सबसे स्पष्ट रूप में इसमें से कि "यीशु मसीह कल आज और युगानुयुग एक सा है।" बाइबल स्पष्ट है कि परमेश्वर नहीं बदलता, परंतु फिर भी यह उन बातों का वर्णन अवश्य करती है जो बदलती प्रतीत होती हैं . . . उदाहरण के लिए, जब हम परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में बात करते हैं, तो बाइबल यह नहीं दर्शाती कि समय के साथ-साथ परमेश्वर थोड़ा सा नरम हो जाता है। परमेश्वर अपने मापदंड को कम नहीं करता। यह ऐसा नहीं है कि उसने हज़ारों वर्षों से मनुष्यजाति को देखा और कहा, "हाँ, मैं जानता था कि वे सिद्ध नहीं थे, परंतु अब मैं देखता हूँ वे वास्तव में कितने असिद्ध हैं, अतः उन्हें उन मापदंड के अनुरूप जीवन जीने की आवश्कता नहीं है।" वे बातें कभी नहीं बदलतीं। जो कुछ परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर कहा और जो परमेश्वर ने संपूर्ण पवित्रशास्त्र में प्रकट किया है, वह अभी भी वैसा ही है। हमें उसी मापदंड में रखा जाता है, यह बहुत भयानक होता यदि वह ऐसा नहीं होता कि सुसमाचार का संदेश भी नहीं बदलता, कि परमेश्वर ने सदैव अपनी सृष्टि से विशेष रूप से और एक उद्देश्य के साथ प्रेम किया, मनुष्यों से इतना प्रेम किया कि वह हमारे जीवन में एक अंतर को लाने लाने, और उसे बदलने के लिए संसार में आ गया ताकि हम सदैव के लिए नरक के भागी न हो जाएँ बल्कि उसके साथ सदैव स्वर्ग में रह सकें . . . परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता एक ओर हमारे लिए एक चेतावनी है और दूसरी ओर हमारे लिए बहुत बड़ी तसल्ली है।
>
> \- डॉ. जैफ्री मूरे

जब हम पवित्रशास्त्र और सामान्य प्रकाशन दोनों पर ध्यान देते हैं, तो इस बात का इनकार करना कठिन हो जाता है कि परमेश्वर इन तीनों रूपों में अपनी सृष्टि से उत्कृष्ट है। सृष्टि सीमित है परंतु परमेश्वर असीमित है। सृष्टि अस्थाई है, परंतु परमेश्वर अनंत है। सृष्टि परिवर्तनीय है, परंतु परमेश्वर अपरिवर्तनीय है।

फिर भी, हमें यहाँ पर सावधान रहना होगा। "असीमित," "अनंत" और "अपरिवर्तनीय" जैसे शब्द इतने अमूर्त हैं कि उन्हें आसानी से गलत समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, धर्मविज्ञान के कई आरंभिक विद्यार्थी एक छोर पर चले जाते हैं। वे ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो परमेश्वर की अकथनीय विशेषताएँ परमेश्वर और उसकी सृष्टि में अभेद्य बाधा की रचना करती हैं। इसके विपरीत, पवित्रशास्त्र और विधिवत धर्मविज्ञान दोनों में स्पष्ट शिक्षाओं के होने के बावजूद भी कुछ लोग केवल परमेश्वर की उत्कृष्टता को ही देखते हैं। वे स्वयं को आश्वस्त करते हैं कि क्योंकि परमेश्वर असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है, इसलिए वह इस सीमित, अस्थाई और परिवर्तित होते हुए संसार में वास्तव में प्रवेश नहीं कर सकता और उसके साथ कार्य नहीं कर सकता।

उदाहरण के लिए, बहुत से लोग तर्क देते हैं कि क्योंकि परमेश्वर के पास असीमित ज्ञान है इसलिए परमेश्वर परिस्थितियों को नहीं जाँचता। परंतु पवित्रशास्त्र इसके विपरीत बात करता है। उदाहरण के लिए उत्पत्ति 18:20-21 में परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के पाप को जाँचने के लिए स्वर्गीय जासूसों को भेजा।

इसी प्रकार, कुछ लोग यह मानते हैं कि क्योंकि परमेश्वर अनंत है, इसलिए परमेश्वर कभी भी मनुष्य की आज्ञाकारिता और अवज्ञाकारिता के प्रति प्रतिक्रिया देने में इंतजार नहीं करता। वास्तव में, वह ऐसा अक्सर करता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 8:2 हमें बताता है कि परमेश्वर निर्गमन के समय इस्राएल को तब तक दंड देने में प्रतीक्षा करता रहा जब तक वे आज्ञाकारिता की अपनी जाँचों में असफल नहीं हो गए।

इसके अतिरिक्त, बहुत से लोग इस बात पर बने रहते हैं कि क्योंकि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, इसलिए परमेश्वर कभी प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर नहीं देता। परंतु परमेश्वर पूरे पवित्रशास्त्र में प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर देता है। हम इसे निर्गमन 32:14 जैसे स्थानों में देखते हैं। जब परमेश्वर ने यह कहा कि वह सीनै पहाड़ के नीचे इस्राएलियों को नाश करने जा रहा है, तो उसने मूसा की प्रार्थना का प्रत्युत्तर दिया और अपने लोगों को नाश नहीं किया।

इस तरह से, ये सुसमाचारिक लोग परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के बारे में अपने दृष्टिकोणों का मेल पवित्रशास्त्र की इन या इन जैसी अन्य शिक्षाओं के साथ कैसे कराते हैं? दुखद रूप से, वे अक्सर परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि के साथ करने के बाइबल के उल्लेखों को केवल "प्रकटीकरण" ही मानते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार परमेश्वर वास्तव में स्वयं को अपनी सृष्टि के सहभागी नहीं करता। वह केवल हमें यह आभास देता है कि वह ऐसा करता है। परंतु जब हम परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को ऐसे रूपों में समझते हैं जो सृष्टि के साथ उसकी सहभागिता की वास्तविकता को धूमिल कर देते हैं, तो हम बाइबल आधारित विश्वास के केंद्र पर प्रहार करते हैं। पवित्रशास्त्र में इस तथ्य की अपेक्षा क्या अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है कि परमेश्वर अपनी सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय सृष्टि के साथ पूरे और सच्चे रूप में सहभागी है। हमारे लिए इस वास्तविकता से अधिक और क्या महत्वपूर्ण हो सकता है कि परमेश्वर हमारे साथ परस्पर बातचीत करता है?

इन गंभीर गलत धारणाओं से बचने के लिए हमें सदैव परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के बारे में बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के संपूर्ण क्षेत्र पर ध्यान देना आवश्यक है। हमने यह देख लिया है कि कैसे पवित्रशास्त्र ईश्वरीय उत्कृष्टता को दर्शाता है। आइए अब यह देखें कि वह कैसे ईश्वरीय सर्वव्यापकता की पुष्टि करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ईश्वरीय सर्वव्यापकता

कुल मिलाकर, "ईश्वरीय सर्वव्यापकता," परमेश्वर की अपनी सृष्टि में सहभागिता की वास्तविकता को दर्शाती है। वास्तव में, बाइबल परमेश्वर की उत्कृष्टता की अपेक्षा संसार में परमेश्वर की सर्वव्यापी सहभागिता को काफी अधिक समय देती है। हम इसे उन कई रूपों में देखते हैं जिनमें पवित्रशास्त्र परमेश्वर के ऐतिहासिक प्रकटीकरणों का उल्लेख करता है। "ऐतिहासिक प्रकटीकरण" वे तरीके हैं जिनमें परमेश्वर ने स्वयं को बाइबल के इतिहास के प्रकट होने में सहभागी किया। पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर के कई विवरण प्रदान करता है। वह उसके विविध नामों और शीर्षकों को प्रकट करता है; वह परमेश्वर के लिए असंख्य रूपकों और अलंकारों को प्रदान करता है; और वह उसके कई कार्यों को दर्शाता है। कुछ विषयों में पवित्रशास्त्र समय की अल्पकालिक अवधियों में परमेश्वर के ऐतिहासिक प्रकटीकरणों पर ध्यान देता है। अन्य विषयों में, वह समय की दीर्घकालिक अवधियों में ऐतिहासिक प्रदर्शनों को दर्शाता है। वह अपने स्वर्गीय न्यायालय और पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्यों को दर्शाता है। वह आत्मिक संसार और भौतिक संसार के साथ अपने संबंधों के विषय में बातों को प्रकट करता है; लोगों के बड़े समूहों और छोटे समूहों के साथ; परिवारों और यहाँ तक कि अलग-अलग लोगों के साथ भी।

दुखद रूप से, कुछ जाने-पहचाने मसीहियों ने बाइबल में ईश्वरीय सर्वव्यापकता के महत्व की गलत व्याख्या की है। उन्होंने अपनी सृष्टि के साथ परमेश्वर के परस्पर संबंध को उसकी ईश्वरीय उत्कृष्टता के इनकार के रूप में देखा है। इनमें से कुछ दृष्टिकोण अन्य की अपेक्षा अधिक उग्र हैं। परंतु, किसी न किसी रूप में, वे सब इस हद तक ईश्वरीय सर्वव्यापकता पर बल देते हैं कि वे परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को ही नकार देते हैं।

उदाहरण के लिए, उनका कहना है कि परमेश्वर सीमित है क्योंकि वह प्रश्न पूछता है, हताशा को व्यक्त करता है, और बुराई पर तुरंत विजय प्राप्त नहीं करता है। कुछ धर्मविज्ञानियों ने सुझाव दिया है कि परमेश्वर अनंत नहीं है क्योंकि जब तक वह अपने लोगों को परख न ले तब तक प्रतीक्षा करता है, तब वह उद्धार देता है, और दंड की चेतावनी देता है। इन्हीं धर्मविज्ञानियों ने यह भी कहा है कि परमेश्वर परिवर्तनीय है क्योंकि परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, नरम पड़ जाता है, और अगुवाई के सिद्धांतों में फेरबदल करता है। ये दृष्टिकोण ईश्वरीय सर्वव्यापकता को अधिक महत्व देकर ईश्वरीय उत्कृष्टता की संपूर्ण वास्तविकता का इनकार कर देते हैं।

परंतु इस बात का इनकार करना कि परमेश्वर इन तरीकों में असीमित. अनंत और अपरिवर्तनीय है, बाइबल आधारित विश्वास के केंद्र पर प्रहार करना है। यदि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य में सीमित है तो हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर के उद्देश्य असफल नहीं होंगे? यदि परमेश्वर समय के अधीन है तो हम कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि मसीह ने हमारे अनंत उद्धार को सुरक्षित किया है? यदि परमेश्वर परिवर्तनीय है तो हम कैसे इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ भरोसे के योग्य हैं? परमेश्वर की सर्वव्यापकता – अर्थात् इतिहास में उसकी पूर्ण सहभागिता – की पुष्टि करना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण उसकी पुष्टि करना भी है जो पवित्रशास्त्र परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के बारे में सिखाता है।

परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को समझने के लिए, हमें परमेश्वर की उत्कृष्टता और उसकी सर्वव्यापकता के बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की संपूर्णता को मजबूती से थामे रखना आवश्यक है। यह करना आसान नहीं है क्योंकि हम शीघ्र ही परमेश्वर के रहस्यों को भेदने की हमारी मानवीय क्षमताओं की सीमा तक पहुँच जाते हैं। त्रिएकता और मसीह के दो स्वभावों जैसे अन्य कठिन विषयों के समान हमारा सामना परमेश्वर के विषय में ऐसे सत्यों के साथ होता है जो हमारी समझ से बाहर होते हैं। परंतु अंतिम विश्लेषण में, पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर की उत्कृष्टता और उसकी सर्वव्यापकता दोनों को अपनाने के लिए कहता है। हम परमेश्वर की अकथनीय सिद्धताओं की संपूर्ण वास्तविकता और अपनी सृष्टि के साथ उसकी सहभागिता की पूरी वास्तविकता का समर्थन करते हैं।

भजन 115:3 संक्षेप में इस बाइबल आधारित दृष्टिकोण को सारगर्भित करता है जब वह यह कहता है :

हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है। (भजन 115:3)

ध्यान दें कि कैसे यह अनुच्छेद परमेश्वर की उत्कृष्टता — अर्थात् इस तथ्य को कि “परमेश्वर स्वर्ग में है” — को एक ऐसे आधार के रूप में देखता है जिसके विषय में हम आश्वस्त हो सकते हैं कि अपनी सृष्टि में “उसने जो कुछ चाहा वही किया।”

चाहे यह जितना भी रहस्यमय हो, फिर भी परमेश्वर असीमित है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उसके साथ जो सीमित है, सहभागी नहीं है। बाइबल के दृष्टिकोण से, यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ऐसा असीमित है कि वह जैसे चाहे सीमित लोगों के क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है।

परमेश्वर अनंत है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह समय से बाहर है। इसकी अपेक्षा, वह अपनी अनंतता ही के कारण अपनी इच्छा के अनुसार समय में सहभागी हो सकता है।

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह परिवर्तन के क्षेत्र से अनुपस्थित है। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर अपनी सारी सिद्धताओं में ऐसा अपरिवर्तनीय है कि वह जैसे चाहता है वैसे ही अपनी परिवर्तनीय सृष्टि में सहभागी होता है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, यदि हम परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की उचित समझ को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर की उत्कृष्टता और सर्वव्यापकता के विषय में बाइबल की शिक्षाओं की पूर्णता को अपनाना चाहिए।

> धर्मविज्ञानी न केवल परमेश्वर की उत्कृष्टता के बारे में बात करते हैं, कि वह कितना ऊँचा और महान है, बल्कि परमेश्वर की सर्वव्यापकता अर्थात् उसकी उपस्थिति के निकटता और घनिष्ठता के विषय में भी। परमेश्वर बड़ी घनिष्ठता के साथ इस संसार की घटनाओं में सहभागी है और हमारे बहुत निकट है। और हम इसे पूरी सर्वोच्चता के साथ यीशु मसीह और उसके देहधारण में देखते हैं, जहाँ परमेश्वर का अदृश्य पुत्र मानवीय शरीर में दृश्य बन गया और वास्तव में हमारी मानवीय परिस्थिति में आ गया। मैं सोचता हूँ कि हम परमेश्वर पवित्र आत्मा की उपस्थिति की निकटता में परमेश्वर की सर्वव्यापकता को देखते हैं . . . और यह परमेश्वर के अस्तित्व और चरित्र का एक रहस्य है। वह उत्कृष्ट, अर्थात् हमसे बहुत ऊपर, है परंतु साथ ही हमारे निकट और हमारे बहुत ही घनिष्ठ है। वह सर्वव्यापी भी है।
>
> - डॉ. फिलिप रायकन

जैसा कि हम देख चुके हैं कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है, हमने उसकी अकथनीय विशेषताओं की पहचान की खोज की है। अब हम इस अध्याय के अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं का उसकी अन्य सिद्धताओं के साथ एकीकरण।

एकीकरण

विधिवत धर्मविज्ञानियों के लिए परमेश्वर की अकथनीय और कथनीय विशेषताओं के बीच अंतर स्पष्ट करना प्रथागत रहा है। परंतु बहुतों ने यह संदेह जताया है कि यह अंतर वास्तव में कितना लाभदायक है। पवित्रशास्त्र इन ईश्वरीय विशेषताओं को श्रेणियों में वर्गीकृत नहीं करता है। वास्तव में, जैसा कि हम देखने वाले हैं, बाइबल के लेखकों ने सभी ईश्वरीय विशेषताओं के साथ ऐसे व्यवहार किया है जैसे कि वे बड़ी निकटता के साथ परस्पर-संबंधित हों। अतः यदि हम यह जानना चाहते हैं कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है, तो हमें यह देखने की आवश्यकता है कि वह अपनी सब विशेषताओं में हमसे भिन्न है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उत्कृष्ट है, अतुल्य है, कुछ बातों में ही नहीं, बल्कि अपने ईश्वरीय तत्व के प्रत्येक पहलू में।

हम परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं और उसकी अन्य सिद्धताओं के एकीकरण की खोज तीन चरणों में करेंगे। पहला, हम परमेश्वर की विशेषताओं को एकीकृत करने की बाइबल आधारित नींव पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम सुसमाचारिक लोगों के बीच इन विषयों पर धर्मवैज्ञानिक विविधता पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम परमेश्वर की सब विशेषताओं को एकीकृत करने के लिए आवश्यक बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की विशालता की खोज करेंगे। आइए परमेश्वर की विशेषताओं को एकीकृत करने की बाइबल आधारित नींव की खोज से आरंभ करें।

बाइबल आधारित नींव

परमेश्वर की विशेषताओं को एकीकृत करना "परमेश्वर की सरलता" की मसीही धर्मशिक्षा के अनुरूप है। परमेश्वर इस रूप में सरल नहीं है कि वह समझने में सरल हो। जब धर्मविज्ञानी परमेश्वर की सरलता के बारे में बात करते हैं तो उनके मन में यह होता है कि परमेश्वर का तत्व मिश्रित नहीं है; यह विभाजित नहीं है। जैसे कि ऑगसबर्ग विश्वास-अंगीकरण का पहला सूत्र दर्शाता है, परमेश्वर "अंग रहित है।" और जैसे कि बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण का पहला सूत्र व्यक्त करता है, परमेश्वर "एक . . . सरल और आत्मिक अस्तित्व है।"

> सरलता की धर्मशिक्षा को लेकर सदियों से विवाद रहा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर में कोई व्यक्तित्व, कोई हलचल, कोई गतिशीलता, कोई विशिष्टता नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह इस भाव में सरल है कि बिना किसी विशेषता के कोई निष्क्रिय प्राणी हो। इसका अर्थ यह है कि यदि मैं इसे ऐसे कहूँ, वह एक प्रकार का प्राणी या व्यक्तित्व है। वह अपने में अपने से बाहर का कुछ भी नहीं जोड़ता है। वह मिश्रित नहीं है। वह एक साथ जुड़े हुए का कोई समूह नहीं है जैसा कि कुछ धर्मविज्ञानी मानते हैं। वह ऐसा है, बाइबल कहती है, परमेश्वर आत्मा है। परिभाषा के आधार पर वह एक आत्मा, एक सरल अस्तित्व है, न कि मिश्रित, न जटिल, और न ही बहुईश्वरवादी। और फिर से, यह अंततः हमारे लिए एक बहुत ही तसल्ली वाली धर्मशिक्षा है क्योंकि इसका अर्थ है कि हमारा परमेश्वर शुद्ध है; वह ऐसी वस्तुओं का मिश्रण नहीं है जिन्हें उसके अस्तित्व में डाल दिया गया हो या जिन्हें उसने रचा हो . . .। इसलिए, ऐसा नहीं है कि वह सरलतापूर्ण है या उसमें कोई रूचि या कोई कौतुहल, या व्यक्तित्व, या प्रेम. या विशेषताएँ नहीं हैं, बात केवल यह है कि उसका तत्व विभिन्न अंगों के जोड़े जाने से नहीं बना है। वह संपूर्ण आत्मा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

- डॉ. विलियम ऐडगर

धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन समयों के दौरान अग्रणी मसीही धर्मविज्ञानियों पर यूनानी दार्शनिक विचारधाराओं के प्रभाव ने परमेश्वर की सरलता की धर्मशिक्षा की पुष्टि करना आसान बना दिया था। परमेश्वर के विषय में यूनानी दृष्टिकोणों ने परमेश्वर की परम एकता या अखंडता पर बल दिया। और इस पृष्ठभूमि ने बाइबल के व्याख्याकारों की अगुवाई पवित्रशास्त्र के इस विषय के प्रति उत्सुकतापूर्वक जागरूक होने में की। परंतु हाल ही के इतिहास में जब यूनानी दार्शनिक विचाराधाराओं का प्रभाव कम हो गया है, तो कुछ अग्रणी धर्मविज्ञानियों ने इस बात पर संदेह व्यक्त किया है कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के सार की सरलता या एकता की शिक्षा देता है। अतः इस धर्मशिक्षा की बाइबल आधारित नींव को दर्शाना महत्वपूर्ण है। व्यवस्थाविवरण 6:4 में मूसा के जाने-पहचाने शब्दों का प्रयोग अक्सर परमेश्वर की सरलता की मान्यता का समर्थन करने में किया जाता है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं:

हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। (व्यवस्थाविवरण 6:4)

आधुनिक अनुवादकों ने कई वैकल्पिक अनुवादों को प्रस्तुत किया है : “यहोवा हमारा परमेश्वर एकमात्र यहोवा है;” “यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है;” या “यहोवा हमारा परमेश्वर है, केवल यहोवा है।”

जो इस अनुच्छेद में परमेश्वर की सरलता को नहीं देखते, वे तर्क देते हैं कि यह इस्राएल को किसी अन्य देवता की अपेक्षा केवल यहोवा की सेवा करने की बुलाहट देता है। परंतु “यहोवा एक ही है” का पारंपरिक अनुवाद स्वयं परमेश्वर की अखंडता या एकता का अर्थ प्रदान करता है। यद्यपि इब्रानी व्याकरण दोनों संभावनाओं का समर्थन करती है, फिर भी यह मानने का वैध कारण भी है कि मूसा ने बाद वाली बात को कहा था।

हम पारंपरिक अनुवाद के पक्ष में कई बातें कह सकते हैं, परंतु इसे इस तरीके से कहना पर्याप्त होगा : व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, मूसा ने इस्राएलियों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और अन्य सभी देवताओं से दूर रहने की बुलाहट दी। हम जानते हैं कि कई बार इस्राएली यहोवा का पूरी तरह से इनकार करने के द्वारा और अन्य राष्ट्रों के देवताओं की सेवा करने के द्वारा पूरी तरह से विश्वास को त्याग देने की परीक्षा में में पड़ गए थे। परंतु अधिकतर, इस्राएली लोग समन्वयात्मकवाद में पड़ गए और अन्य जातियों और धर्मों की मान्यताओं और रीतियों को अपनी मान्यताओं और रीतियों के साथ मिश्रित कर दिया। ये अन्य जातियाँ अपने देवताओं को इस तरह से पुकारती थीं, जैसे बाल, अशतारोत और अन्य बहुत से देवता, बहुवचन में इसलिए क्योंकि वे विश्वास करते थे कि ये देवता विभिन्न स्थानों के बीच विभाजित हैं। वे इन देवताओं को एक स्थान में एक तरीके से और अन्य स्थान में दूसरे तरीके से मानते थे।

इसके विपरीत, मूसा ने निरंतर इस्राएल को सिखाया कि परमेश्वर की आराधना केवल परमेश्वर द्वारा नियुक्त एक ही स्थान पर की जानी चाहिए। अन्य जातियों के देवताओं के विपरीत परमेश्वर को इस या उस स्थान के बीच भागों में बाँटा नहीं जा सकता, क्योंकि “यहोवा एक है।” इस भाव में तब व्यवस्थाविवरण 6:4 परमेश्वर की सरलता की मसीही धर्मशिक्षा, अर्थात् यह कि परमेश्वर को भागों में बाँटा नहीं जा सकता, की नींव का निर्माण करता है। याकूब 2:19 के शाब्दिक अनुवाद में याकूब ने व्यवस्थाविरण 6:4 की इस समझ की पुष्टि की जब उसने कहा :

तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है। (याकूब 2:9)

याकूब ने यह नहीं लिखा, "तुझे विश्वास है वहाँ एक परमेश्वर है," जैसा कि कुछ अनुवाद लिखते हैं। वह शाब्दिक रूप से ऐसे लिखता है, "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है।" इस प्रकार, याकूब ने पुष्टि की कि व्यवस्थाविवरण 6:4 परमेश्वर की अखंडता, एकता, और सरलता को सिखाता है।

ईश्वरीय सरलता की बाइबल आधारित धर्मशिक्षा में परमेश्वर-विज्ञान के लिए कई निहितार्थ हैं। परंतु जैसा कि हम यहाँ देख सकते हैं, यह धर्मशिक्षा परमेश्वर की विशेषताओं के एकीकरण की खोज करने के लिए बाइबल आधारित नींव को स्थापित करती है। परमेश्वर की सिद्धताएँ परमेश्वर के विभिन्न अंग नहीं हैं। वे सब उसके सार की पूर्ण रूप से एकीकृत, अंतर-संबंधित विशेषताएँ हैं।

परमेश्वर की विशेषताओं के एकीकरण की इस बाइबल आधारित नींव को ध्यान में रखते हुए, हमें अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : परमेश्वर की कथनीय और अकथनीय सिद्धताओं को एकीकृत करने के प्रति सुसमाचारिक दृष्टिकोणों के बीच धर्मवैज्ञानिक विविधता।

धर्मवैज्ञानिक विविधता

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा था, यद्यपि सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को सारगर्भित करने के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया है, फिर भी उनमें काफी एकता रही है। कई रूपों में, ऐसी ही बात परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं और उसकी कथनीय विशेषताओं के एकीकरण में सत्य है। इस एकीकरण को कई रूपों में व्यक्त किया गया है। फिर भी, किसी न किसी रूप में, सुसमाचारिक लोगों ने काफी दृढ़ता के साथ विशेषताओं के इन दोनों वर्गों को एकीकृत करने के महत्व की पुष्टि की है।

सुसमाचारिक लोगों में इस धर्मवैज्ञानिक विविधता की खोज करने के लिए आइए एक बार फिर से उन तीन प्रलेखों को देखें जिनका उल्लेख हमने पहले किया था। पहले, हम ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण की जाँच करेंगे। फिर हम, बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण को देखेंगे। और तीसरा, हम वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी के साथ कुछ समय व्यतीत करेंगे। आइए पहले ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण पर ध्यान दें।

ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण

आपको याद होगा कि ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण का पहला सूत्र परमेश्वर को ऐसे दर्शाता है :

> अनंत, शरीर रहित, अंग रहित, असीमित सामर्थ्य, ज्ञान, और भलाई के साथ।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, अनंत, शरीर रहित, अंग रहित, असीमित जैसे शब्द अधिकतर परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के साथ जुड़े होते हैं क्योंकि वह इन रूपों में अपनी सृष्टि से भिन्न है। अंतिम तीन शब्दों, सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई को सामान्यतः कथनीय विशेषताओं के साथ पहचाना जाता है क्योंकि हम रचित प्राणियों के स्तर पर परमेश्वर के साथ इन विशेषताओं को साझा करते हैं।

परंतु ध्यान दें कि विश्वास-अंगीकरण इन श्रेणियों के साथ ऐसे व्यवहार नहीं करता है जैसे कि वे बिलकुल पृथक हों। यह केवल परमेश्वर के सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई के बारे में ही बात नहीं करता है। इसकी अपेक्षा, यह इसमें विशेषण "असीमित" — या लैटिन में इमैनसुस जोड़ देता है। लैटिन के लेख की व्याकरण दर्शाती है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य में असीमित है, अपने ज्ञान में असीमित है, और अपनी भलाई में असीमित है।

वास्तव में, ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण परमेश्वर की असीमितता के माध्यम से, अर्थात् इस सच्चाई के माध्यम से देखता है कि वह असीमित है, और उसकी सामर्थ्य, ज्ञान और भलाई को उसकी असीमितता के प्रकाश में देखता है। और ऐसा करने के द्वारा विश्वास-अंगीकरण यह मानता है कि

परमेश्वर की असीमितता की अकथनीय विशेषताओं को पूर्ण रूप से उसकी कथनीय विशेषताओं के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

हमने ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण में जो कुछ अभी देखा है उसकी तुलना बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण के पहले सूत्र के साथ करने के द्वारा हम परमेश्वर की विशेषताओं के प्रति दृष्टिकोणों में धर्मवैज्ञानिक विविधताओं को देख सकते हैं।

बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण

बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण कहता है कि परमेश्वर यह है :

> अनंत, अबोधगम्य, अदृश्य, अपरिवर्तनीय, असीमित, सर्वशक्तिमान, सिद्ध रूप से बुद्धिमान, न्यायी, [और] भला।

हमने पहले बताया था कि अधिकतर अनंत, अबोधगम्य, अदृश्य, अपरिवर्तनीय, असीमित जैसे शब्दों को अकथनीय विशेषताओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। और अंतिम चार शब्द सबसे सामान्य रूप में परमेश्वर की कथनीय विशेषताओं से जुड़े हैं। परंतु ध्यान दें कि इन अंतिम चार विशेषताओं को सीधे-सीधे “सामर्थी, बुद्धिमान, न्यायी और भले” के रूप में नहीं दर्शाया गया है। यद्यपि हमारे अंग्रेज़ी के स्तरीय अनुवाद इसे स्पष्ट नहीं करते, परंतु मूल फ्रेंच अनुवाद यहाँ “टूट पूइसांत,” अर्थात् “पूरी तरह से या सिद्ध रूप से सामर्थी” और “टूट साजे,” अर्थात् “पूरी तरह से या सिद्ध रूप से बुद्धिमान” वाक्यांशों का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त, विशेषण “टूट” को अप्रत्यक्ष रूप से “न्यायी” और “भले” के साथ भी जोड़ा जा सकता है, इसलिए हम उनका अनुवाद “पूर्ण न्यायी” और “पूर्ण भले” के रूप में करते हैं।

लगभग ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण के समान बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण इस वास्तविकता के माध्यम से देखता है कि परमेश्वर असीम है और उसकी सामर्थ्य, ज्ञान, न्याय और भलाई को उसकी असीमितता के प्रकाश में देखता है। यद्यपि बैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण ठीक उन्हीं शब्दों या विभाजनों का प्रयोग नहीं करता जिनका ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण करता है, तब भी हम समानताओं को देख सकते हैं।

उन धर्मवैज्ञानिक विविधताओं को मन में रखते हुए जिन्हें हम ऑग्सबर्ग विश्वास-अंगीकरण औरबैल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण में देख चुके हैं, आइए हम एकीकरण की उस और भी अधिक व्यापक खोज की ओर मुड़ें जो वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी में पाई जाती है।

वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी

जैसे कि आपको याद होगा, वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न 4 का उत्तर इस कथन से आरंभ होता है :

> परमेश्वर एक आत्मा है

यह तब परमेश्वर के आत्मा होने की तीन अकथनीय विशेषताओं को दर्शाता है :

> असीमित, अनंत और . . . अपरिवर्तनीय

परंतु इन अकथनीय सिद्धताओं के विषय में हमें अलग-थलग रूप में सोचने देने की अनुमति देने की अपेक्षा वेस्टमिंस्टर स्पष्ट करता है कि ये तीनों बातें परमेश्वर के विषय में सही हैं :

> अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य में।

परमेश्वर की विशेषताओं को एकीकृत करने की वेस्टमिंस्टर प्रश्नोत्तरी की रणनीति कई लाभ प्रदान करती है। सबसे पहले, यह परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं को सारगर्भित करने के लिए तीन विस्तृत श्रेणियों का प्रयोग करती है। परमेश्वर अपनी सृष्टि से कैसे भिन्न है? वह "असीमित, अनंत, और अपरिवर्तनीय" है। तब प्रश्नोत्तरी उसकी कथनीय विशेषताओं की ओर खुलने वाली इन तीन खिड़कियों, या विशेषताओं से देखने के द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देती है कि कैसे परमेश्वर असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर "अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य" में असीमित है। परमेश्वर अपने "अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य" में अपरिवर्तनीय है। वास्तव में, वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के उसकी कथनीय सिद्धताओं के साथ पूर्ण एकीकरण की खोज करने का एक विधिवत तरीका प्रदान करती है।

अब जबकि हमने इस क्षेत्र में सुसमाचारिक लोगों के बीच बाइबल आधारित नींव और धर्मवैज्ञानिक विविधता पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के उसकी अन्य विशेषताओं के साथ एकीकरण को देख लिया है, इसलिए आइए इन विषयों पर बाइबल के दृष्टिकोणों की विशालता पर ध्यान देने के महत्व की खोज करें।

बाइबल आधारित दृष्टिकोण

इस अध्याय में हमने जो कुछ कहा है उसकी रचना इस प्रश्न का उत्तर देने में हमारी सहायता करने के लिए की गई है, "परमेश्वर अपनी सृष्टि से कैसे भिन्न है?" और जैसा कि हमने सुझाव दिया है, परमेश्वर अपनी सारी सिद्धताओं में अपनी सृष्टि से भिन्न है। पवित्रशास्त्र अनेक तरीकों से इस दिशा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है, किंतु हम केवल कुछ ही बाइबल आधारित दृष्टिकोणों का अध्ययन कर सकते हैं। परंतु विषय का केंद्र यह है : जब हम बाइबल की शिक्षाओं के संपूर्ण क्षेत्र पर ध्यान देते हैं तो यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर की कुछ ही नहीं बल्कि सारी विशेषताएँ अकथनीय हैं।

हम वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी के चौथे प्रश्न और उत्तर की रणनीति का अनुसरण करने के द्वारा उसे स्पष्ट करेंगे जो कुछ हमारे मन में है। जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, प्रश्नोत्तरी इन विषयों को इस बात पर ध्यान देने के द्वारा सारगर्भित करती है कि परमेश्वर अपनी उस प्रत्येक अकथनीय विशेषता में जिससे उसकी पहचान होती है, असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

परमेश्वर की विशेषताओं को एकीकृत करने के बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की विशालता को देखने के लिए हम प्रश्नोत्तरी में निहित सातों कथनीय विशेषताओं पर ध्यान देंगे; हम परमेश्वर के अस्तित्व के साथ आरंभ करेंगे।

अस्तित्व

कई रूपों में, परमेश्वर का अस्तित्व ऐसी विशेषता है जो कि कथनीय, या परमेश्वर के द्वारा सृष्टि के साथ साझी की गई विशेषता है। हम जानते हैं कि मनुष्यजाति सहित वह प्रत्येक वस्तु जिसे परमेश्वर ने रचा है, वास्तव में अस्तित्व में है। परंतु हम परमेश्वर के अस्तित्व की महिमा को समझने में असफल हो जाते हैं यदि हम परमेश्वर के अस्तित्व और अपने अस्तित्व के बीच के मूल अंतर को स्वीकार नहीं करते हैं। हमारा अस्तित्व सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय है और परमेश्वर का अस्तित्व असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर के अस्तित्व और सृष्टि के बीच अंतर को अक्सर दो मुख्य रूपों प्रदर्शित किया गया है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की "विशालता" और उसकी "सर्वविद्यमानता" को दर्शाया है।

एक ओर, परमेश्वर की विशालता सृष्टि से उच्चतर उसका असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय अस्तित्व है। 1 राजाओं 8:27 में जब सुलैमान ने मंदिर का समर्पण किया, तो उसने एक बहुत बड़ी धर्मवैज्ञानिक पूर्वधारणा की पुष्टि की जो पवित्रशास्त्र की प्रत्येक बात का आधार है। उसने कहा, “स्वर्ग में वरन् उँचे स्वर्ग में भी [परमेश्वर] नहीं समाता।” परमेश्वर अपनी सृष्टि से ऐसा भिन्न है कि उसका अस्तित्व किसी भी तरह से उसकी सृष्टि के क्षेत्र में सीमित नहीं है। वह अपनी सृष्टि के रचे जाने से भी पहले अस्तित्व में था, वह वर्तमान में बिना किन्हीं सीमाओं के अस्तित्व में है, और वह संपूर्ण सृष्टि से बढ़कर सदैव अस्तित्व में बना रहेगा।

दूसरी ओर, परमेश्वर की सर्वविद्यमानता को सृष्टि के प्रत्येक स्थान में उसके अस्तित्व के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विधिवत धर्मविज्ञानी दर्शाते हैं कि सीमित, समय में बँधी हुई, परिवर्तनीय सृष्टि के प्रत्येक पहलू के विपरीत परमेश्वर का अस्तित्व सब स्थानों में है। जैसा कि परमेश्वर यिर्मयाह 23:24 में कहता है, “क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?” परमेश्वर की सर्वविद्यमानता में विश्वास करना बाइबल आधारित विश्वास में इतना आधारभूत है कि प्रेरितों के काम 17:28 में पौलुस यूनानी कवियों के साथ इस बात में सहमत हुआ कि “हम [परमेश्वर] में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं।” भजन 139:7-10; यशायाह 66:1; प्रेरितों 7:48-49 जैसे अन्य कई अनुच्छेद भी परमेश्वर की सर्वविद्यमानता के विषय को स्पर्श करते हैं।

> एक उल्लेखनीय अनुच्छेद जिस पर परमेश्वर की सर्वविद्यमानता की धर्मशिक्षा आधारित की गई है . . . वह है प्रेरितों के काम 17:24-28 जिसमें पौलुस एथेंस में प्रचार कर रहा है और चकित हो जाता है कि परमेश्वर इन मूर्तिपूजकों तक पहुँचने में भी सक्षम है। और इसलिए, स्पष्ट करने के लिए जो कुछ वह कहता है उसका आंशिक भाग यह है, परमेश्वर केवल यहूदियों का ही परमेश्वर नहीं है; परमेश्वर पूरी पृथ्वी के सब स्थानों के लोगों का परमेश्वर है। वह एक तरह से पूरे ब्रह्मांड, पूरे सार्वभौम की बात करता है। और साथ ही साथ वह परमेश्वर के बारे में टिप्पणी करता है : परमेश्वर हममें से किसी भी एक से दूर नहीं है, चाहे मूर्तिपूजक हों या यहूदी विश्वासी . . .। वास्तव में, वह ऐसा परमेश्वर है जिसमें हम जीवित रहते, और चलते फिरते और स्थिर रहते हैं। अर्थात् वह प्रत्येक स्थान पर है . . .। प्रेरितों के काम 17:24-28 के साथ जोड़ने और समन्वयित किया जाने वाला अन्य अनुच्छेद यिर्मयाह 23:23-24 है जिसमें मुख्य बात यह है कि आप परमेश्वर से छिप नहीं सकते हैं। छिपने के लिए कोई स्थान नहीं है। आपको पता है, आप भाग तो सकते हैं परंतु आप छिप नहीं सकते। और यिर्मयाह यह इसलिए कहता है क्योंकि पूरी पृथ्वी परमेश्वर से परिपूर्ण है।
>
> - डॉ. आर. टॉड मैंगम

परमेश्वर के अस्तित्व के अतिरिक्त लघु प्रश्नोत्तरी यह भी पुष्टि करती है कि परमेश्वर की बुद्धि असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

बुद्धि

कई रूपों में, बुद्धि परमेश्वर की ऐसी कथनीय विशेषता है जिसे परमेश्वर के विवेकपूर्ण प्राणियों के साथ साझा किया गया है। परंतु जितनी भी बुद्धि हमारे पास हो, पवित्रशास्त्र और सामान्य प्रकाशन इसे स्पष्ट करते हैं कि हमारी बुद्धि सीमित, अस्थाई और अपरिवर्तनीय है। इसलिए, एक वह रूप जिनमें परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है, वह यह है कि उसकी बुद्धि असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानी परमेश्वर की सर्वज्ञानता और उसकी अबोधगम्यता का उल्लेख करने के द्वारा विशिष्ट रूप से परमेश्वर की बुद्धि के अकथनीय पहलुओं पर बल देते हैं।

परमेश्वर की सर्वज्ञानता वह सच्चाई है कि परमेश्वर के पास सब बातों का ज्ञान है। अय्यूब 37:16 परमेश्वर के "सिद्ध ज्ञान" को दर्शाता है। इब्रानियों 4:13 कहता है कि "सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है।" और भजन 33:15 कहता है कि "[परमेश्वर लोगों के] सब कामों का विचार करता (या उन्हें समझता) है।" अन्य कई अनुच्छेद ऐसी बातों की ओर संकेत करने के द्वारा परमेश्वर की सर्वज्ञानता को स्पष्ट करते हैं जिन्हें परमेश्वर जानता है कि हम नहीं जानते हैं। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 23:24 में परमेश्वर पूछता है, "क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूँ?"

परमेश्वर की अबोधगम्यता की धर्मशिक्षा में भी परमेश्वर की बुद्धि के कथनीय चरित्र पर बल दिया गया है। इस शब्द का अर्थ यह नहीं है कि हम परमेश्वर के मन की किसी भी बात को नहीं जान सकते हैं। इसके विपरीत, हम उसके कुछ विचारों को जान सकते हैं जब वह उन्हें हम पर प्रकट करता है। परंतु परमेश्वर की बुद्धि इस भाव में अकथनीय है कि परमेश्वर के विचार पूरी तरह से नहीं जाने जा सकते हैं। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 11:33 में कहा, परमेश्वर के विचार और मार्ग "अथाह . . . और कैसे अगम हैं।" अय्यूब 11:7 घोषणा करता है कि हम "परमेश्वर का गूढ़ भेद" नहीं पा सकते। भजन 139:6 दर्शाता है कि "[परमेश्वर] का ज्ञान . . . गंभीर और मेरी समझ से बाहर है।" इसी तरह के अन्य अनुच्छेद जैसे 1 शमूएल 16:7; 1 इतिहास 28:9; भजन 139:1-4; और यिर्मयाह 17:10 भी दर्शाते हैं कि एक रूप जिसमें परमेश्वर अपनी सृष्टि से भिन्न है वह यह है कि वह हमारे विपरीत अपनी बुद्धि में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

> परमेश्वर की बुद्धि उत्कृष्ट विचार हैं, ऐसे विचार जो परमेश्वर से संबंधित हैं, जो परमेश्वर के साथ रहते हैं, जिन्हें वह हमारे साथ साझा करना चाहता है। और सच्चाई यह है कि जब हम उत्कृष्टता के अनुसार सोचते हैं, तो उसी प्रकार का जीवन वह चाहता है कि हम जीएँ। परंतु यह हमारी सीमा से बाहर की बात है। केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही हमें उस तरह के जीवन-स्तर को प्राप्त करने का अवसर मिलता है . . . हमें परमेश्वर के उन उत्कृष्ट विचारों की आवश्यकता है, और तब, निस्संदेह उसके पवित्र आत्मा की कि वह आकर हम में वास करे ताकि हम न केवल वैसे जीवन जी सकें, बल्कि वैसे सोच भी सकें, और तब अन्य लोगों को यह बता सकें, "बुद्धि का मार्ग यही है।"
>
> \- डॉ. मैट फ्रीडमैन

तीसरा, परमेश्वर न केवल अपने अस्तित्व और अपनी बुद्धि में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है, बल्कि अपनी सामर्थ्य में भी।

सामर्थ्य

पवित्रशास्त्र और सामान्य प्रकाशन दोनों दर्शाते हैं कि कई रूपों में परमेश्वर की सामर्थ्य एक कथनीय विशेषता है क्योंकि सामर्थ्य एक ऐसी विशेषता है जिसे सृष्टि के साथ साझा किया गया है। परंतु फिर भी सृष्टि की सबसे बड़ी शक्तियाँ भी सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय हैं। अतः पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि कैसे परमेश्वर की सामर्थ्य अकथनीय है।

परमेश्वर की सामर्थ्य और सृष्टि के बीच विपरीतता को अक्सर विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर की "सर्वसामर्थ्य" और परमेश्वर की "सर्वोच्चता" के आधार पर व्यक्त किया जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक ओर, जब हम परमेश्वर की सर्वसामर्थ्य के बारे में बात करते हैं, तो हमारा अर्थ यह होता कि परमेश्वर सबसे शक्तिशाली है। उदाहरण के लिए, अय्यूब 42:2 में अय्यूब चकित होकर यह कहता है, "तू सब कुछ कर सकता है।" भजन 115:3 कहता है कि "[परमेश्वर] ने जो चाहा वही किया है।" यिर्मयाह 32:17 यह कहते हुए परमेश्वर की स्तुति करता है कि, "तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है।" और मत्ती 19:26 में यीशु अपने शिष्यों को आश्वस्त करता है कि "परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।"

अब हमें यहाँ एक और महत्वपूर्ण योग्यता को जोड़ना सुनिश्चित करना चाहिए : परमेश्वर की सामर्थ्य उसकी अन्य विशेषताओं के साथ सदैव मेल खाती है। वह ऐसे कार्य नहीं कर सकता जो उसके सार की अन्य सिद्धताओं के विपरीत हो। उदहारण के लिए, पवित्रशास्त्र कुछ बातों को स्पष्ट रूप से बताता है जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता। हम गिनती 23:19; 1 शमूएल 15:29; 2 तीमुथियुस 2:13; इब्रानियों 6:18; और याकूब 1:13,17 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता, पाप नहीं कर सकता, बदल नहीं सकता, और न ही स्वयं का इनकार कर सकता है। यदि हम इस योग्यता को अपने मन में रखें, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर इस भाव में सर्वसामर्थी है कि उसकी सामर्थ्य असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

> बाइबल के ऐसे अनुच्छेद जो यह दर्शाते प्रतीत होते हैं कि ऐसी कुछ बातें हैं जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता है, वे वास्तव में परमेश्वर की सर्वसामर्थ्य के वास्तविक अर्थ की बात नहीं कर रही हैं . . . वह केवल वही कर सकता है जो उसके स्वभाव के साथ मेल खाता है। झूठ बोलना उसके ईश्वरीय स्वभाव के बिलकुल विपरीत होगा। इसलिए ऐसी कुछ बातें हैं जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता, परंतु यह पूरी तरह से उसके स्वभाव के क्षेत्र में हैं।
>
> - रेव्ह, क्लीट हक्स

दूसरी ओर, विधिवत धर्मविज्ञानी परमेश्वर की सामर्थ्य के असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय चरित्र को "परमेश्वर की सर्वोच्चता" के रूप में दर्शाते हैं। सरल रूप में कहें तो, परमेश्वर की सर्वोच्चता का अर्थ सृष्टि पर उसका संपूर्ण नियंत्रण है।

अब कलीसिया की विभिन्न शाखाएँ इस बात पर असहमत हैं कि परमेश्वर सृष्टि पर अपने सर्वोच्च नियंत्रण को कैसे क्रियान्वित करता है। और हम इस विषय पर बाद के एक अध्याय में विचार विमर्श करेंगे। परंतु यहाँ हमें केवल इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर के पास सब बातों पर नियंत्रण करने के लिए असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय सामर्थ्य है। जैसा कि 2 इतिहास 20:6 में राजा यहोशापात ने घोषणा की, "क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता है।" या जैसे अय्यूब 42:2 में लिखता है, "तेरी युक्तियों में से कोई रूक नहीं सकती।" दानिय्येल 4:35 में राजा नबूकदनेस्सर तक ने यह माना कि परमेश्वर "स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है।" इफ़िसियों 1:11 के अनुसार परमेश्वर की सर्वोच्चता इतनी विशाल है कि वह "अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है।" और रोमियों 8:28 बड़े क्लेशों के समय के दौरान भी हमें परमेश्वर की सर्वोच्चता के विषय में आश्वस्त करता है क्योंकि "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।" ये और अन्य असंख्य अनुच्छेद स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि परमेश्वर की सर्वोच्चता असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

परमेश्वर के अस्तित्व, बुद्धि और सामर्थ्य के साथ व्यवहार करने के अतिरिक्त वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी यह भी दर्शाती है कि परमेश्वर अपनी पवित्रता में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

पवित्रता

कई रूपों में, पवित्रता परमेश्वर की एक कथनीय विशेषता है क्योंकि इसे सृष्टि के कुछ पहलूओं के साथ साझा किया गया है। पवित्रशास्त्र निरंतर स्थानों, वस्तुओं, आत्माओं और लोगों के पवित्र होने के बारे में बता देता है। और बाइबल के जिन विशेषणों का हम सामान्यतः "पवित्र," "शुद्ध" या "पवित्रीकृत" — इब्रानी में कादोश קָדוֹשׁ)) और यूनानी में हगिओस (ἅγιος) — के रूप में अनुवाद करते हैं, उनका सामान्य अर्थ "अलग किया" या "चुना हुआ" है। परंतु सामान्य प्रकाशन और पवित्रशास्त्र दोनों यह स्पष्ट करते हैं कि रचित प्राणियों की पवित्रता सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय है, जबकि परमेश्वर की पवित्रता असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

विधिवत प्रक्रियाओं में, धर्मविज्ञानी अक्सर परमेश्वर की नैतिक पवित्रता की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा परमेश्वर की पवित्रता की अकथनीय विशेषताओं की ओर बढ़ते हैं। वे उसे भी दर्शाते हैं जिसे उसकी महिमामय पवित्रता कहा जा सकता है।

एक ओर, परमेश्वर की नैतिक पवित्रता इस तथ्य को दर्शाती है कि वह सारी बुराई से अलग है। जैसे कि भजन 92:15 में लिखा है, "और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं।" और हबक्कूक 1:12-13 आश्चर्य करता है, "पवित्र परमेश्वर . . . तेरी आँखे ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता; और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता।" परमेश्वर की नैतिक शुद्धता बाइबल आधारित विश्वास के लिए इतनी मूलभूत है कि याकूब ने बड़े आत्मविश्वास के साथ याकूब 1:13 में यह लिखा, "न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।"

दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र उसकी ओर भी संकेत करता है जिसे परमेश्वर की महिमामय पवित्रता कहा गया है। यह शब्द दर्शाता है कि परमेश्वर अपने नैतिक रूप से शुद्ध रचित प्राणियों सहित अपनी संपूर्ण सृष्टि से अलग है।

> परमेश्वर की नैतिक पवित्रता और उसकी तत्वमीमांसा-संबंधी पवित्रता, या महिमामय पवित्रता के बीच का अंतर उस पुराने विचार की ओर जाता है जो शब्द "पवित्र" का अर्थ है, और इसका अर्थ मूलभूत रूप से "अलग किए हुए होने" से है। और दो बातें हैं जिनसे परमेश्वर अलग है। सबसे पहली, वह पापियों से अलग है। वह शुद्ध है; वह कभी पाप नहीं करता; वह सिद्ध रूप से धर्मी है और इसलिए वह उस रूप में पापियों से अलग है - नैतिक रूप से सिद्ध, इस भाव में शुद्ध, पवित्र। परंतु एक दूसरा भाव भी है और उसमें भी परमेश्वर पवित्र है। वह यह है कि वह हमसे ऊँचा है; वह हमसे भिन्न है; वह एक भिन्न स्वभाव का और भिन्न तत्वमीमांसा-संबंधी स्तर का, अर्थात् एक ऊच्च स्तर का है, और इस रूप में वह पवित्र भी है। उसके मार्ग और विचार हमारे मार्गों और विचारों से बहुत ऊँचे हैं। अतः परमेश्वर पवित्र है, अर्थात्, अपने अस्तित्व और अपने चरित्र की धार्मिकता में अलग किया हुआ है।
>
> \- रेव्ह. दान हेंडली

परमेश्वर की महिमामय पवित्रता सबसे सबसे स्पष्ट रूप में यशायाह 6:3 में प्रकट की गई है जहाँ साराप यह पुकारते हैं :

> सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है। (यशायाह 6:3)

इस अनुच्छेद में परमेश्वर के सिंहासन के सामने सेवा करने वाले नैतिक रूप से शुद्ध प्राणी, अर्थात् साराप यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर की आराधना तीन बार पवित्र, अर्थात् अपनी पवित्रता में सर्वश्रेष्ठ के रूप में होनी चाहिए। परमेश्वर की महिमामय पवित्रता की ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ निर्गमन 15:11; 1 शमूएल 2:2; यशायाह 57:15; और होशे 11:9 में प्रकट होती हैं।

न केवल परमेश्वर अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य और पवित्रता में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है, बल्कि ये अकथनीय विशेषताएँ उसके न्याय को भी चित्रित करती हैं।

न्याय

कई रूपों में, सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों दर्शाते हैं कि न्याय एक कथनीय गुण हैं क्योंकि नैतिक रचित प्राणी, विशेषकर मनुष्य न्यायी और धर्मी हो सकते हैं। परमेश्वर के न्याय की अवधारणा को अक्सर शब्द तस्दीक (צַדִּיק) से जुड़े इब्रानी शब्दों के समूह और शब्द डिकायोसुने (δικαιοσύνη) से जुड़े यूनानी शब्दों के समूह के द्वारा व्यक्त किया जाता है। हम सामान्य तौर पर इन शब्दों का अनुवाद "धार्मिकता" या "न्याय" के रूप में करते हैं। परंतु जहाँ मानवीय धार्मिकता और न्याय सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय हैं, वहीं परमेश्वर की धार्मिकता या न्याय असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के न्याय की विशेषता को अक्सर उसके स्वर्गीय न्यायालय में दिए जाने वाले निर्णयों के साथ जोड़ा जाता है। जैसा कि 1 पतरस 1:17 में लिखा है, हमारे पास ऐसा पिता है जो, "बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है।" रोमियों 2:5-6 के अनुसार, परमेश्वर का "सच्चा न्याय . . . हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा।" और क्योंकि परमेश्वर के निर्णय सदैव सच्चे होते हैं, इसलिए रोमियों 9:14 में पौलुस ने पूछा, "क्या परमेश्वर के यहाँ अन्याय है?" और उसका उत्तर दृढ़ था, "कदापि नहीं।" व्यवस्थाविवरण 32:4 में मूसा ने घोषणा की, "उसकी सारी गति न्याय की है. . . वह धर्मी और सीधा है।" अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना 17:25 में यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता को "धार्मिक" – या न्यायी – "पिता" कहकर संबोधित किया।

विधिवत धर्मविज्ञानियों ने दो मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर के न्याय की ओर ध्यान आकर्षित किया है : वे हैं, परमेश्वर के न्यायपूर्ण पुरस्कार और उसके न्यायपूर्ण दंड।

एक ओर, परमेश्वर का स्वभाव धार्मिकता के लिए न्यायपूर्ण पुरस्कार देने का है। जैसे भजन 58:11 कहता है, "निश्चय धर्मी के लिए फल है [क्योंकि] . . . परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है।" और पौलुस ने तब उस धार्मिकता का उल्लेख किया जो मसीह में धर्मी ठहराए जाने वाले सब लोगों के पास आती है, जब उसने 2 तीमुथियुस 4:8 में "धर्म का मुकुट . . . जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है . . . उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं, देगा" के बारे में बात की। कई बार ऐसा प्रतीत हो सकता है जैसे धार्मिकता के लिए कोई पुरस्कार नहीं है। परंतु हम परमेश्वर के न्यायपूर्ण पुरस्कार के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं क्योंकि परमेश्वर अपने न्याय में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय बना रहता है।

दूसरी ओर, परमेश्वर का स्वभाव बुरा करने वालों को न्यायपूर्ण दंड देने का है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-8 में पौलुस ने बल दिया कि "परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि . . . जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे [वह] पलटा लेगा।" और प्रेरितों के काम 17:31 में पौलुस ने पश्चाताप करने की बुलाहट दी क्योंकि "[परमेश्वर] ने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है।" वास्तव में, पाप के विरुद्ध परमेश्वर का न्यायपूर्ण दंड बाइबल के विश्वास का एक स्तम्भ था। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 3:26 में स्पष्ट किया, परमेश्वर "आप ही धर्मी ठहरे, और . . . धर्मी ठहरानेवाला हो।" क्योंकि मसीह के प्रायश्चित ने उन सबके बदले जो विश्वास करते हैं न्याय की मांग को पूरा कर दिया। ये और अन्य कई अनुच्छेद इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि परमेश्वर का असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय न्याय कैसे उसके न्यायपूर्ण दंड में प्रदर्शित होता है।

परमेश्वर के अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता और न्याय के बाद, लघु प्रश्नोत्तरी परमेश्वर की भलाई का उल्लेख करती है।

भलाई

कई रूपों में, भलाई एक कथनीय विशेषता है क्योंकि पवित्रशास्त्र अक्सर सृष्टि के भले होने को दर्शाता है। उत्पत्ति 1:31 में परमेश्वर ने सृष्टि को देखा और कहा कि यह "बहुत अच्छी" थी। और पौलुस ने 1 तीमुथियुस 4:4 में इस ईश्वरीय घोषणा की फिर से पुष्टि की। सामान्य रूप में इब्रानी में तोव (טוֹב) और यूनानी में अगाथोस (ἀγαθός) किसी व्यक्ति या किसी वस्तु के अनुमोदन को दर्शाता है। अतः सृष्टि के बहुत से पहलुओं का वर्णन उचित रूप से "भले" के रूप में किया जा सकता है। निस्संदेह, सृष्टि की भलाई सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय है। परंतु इसके विपरीत, परमेश्वर की भलाई असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

जब पवित्रशास्त्र यह कहता है कि परमेश्वर "भला" है तो इसका अर्थ है कि वह असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय रूप से अनुमोदन के योग्य है। अब, यह कहते हुए, हमें यह भी शीघ्रता के साथ जोड़ना चाहिए कि ऐसी कोई भलाई नहीं है जिसे परमेश्वर को अपने से बाहर पूरा करना हो। परमेश्वर स्वयं ही भलाई की परिभाषा है। जैसा कि बेल्ज़िक विश्वास-अंगीकरण के पहले सूत्र में लिखा है, परमेश्वर "भला है, और सब अच्छी बातों का उमड़ता हुआ सोता है।"

विधिवत धर्मविज्ञान में, परमेश्वर की भलाई कई चिर-परिचित बाइबल आधारित शिक्षाओं के साथ बड़ी निकटता के साथ जुड़ी हुई है। परंतु दो मुख्य श्रेणियों में सोचना सहायक होता है : परमेश्वर की प्रत्यक्ष भलाई और परमेश्वर की अप्रत्यक्ष भलाई।

एक ओर, जब हम परमेश्वर की प्रत्यक्ष भलाई की बात करते हैं तो हमारे मन में परमेश्वर की वह भलाई होती हैं जो उसके रचित प्राणियों के प्रति उसकी परोपकारिता, दया, प्रेम और धैर्य में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, भजन 34:8 उसकी भलाई के एक प्रमाण के रूप में परमेश्वर की परोपकारिता के बारे में बात करता है जब वह कहता है, "परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है।" निर्गमन 33:19 में परमेश्वर की भलाई को उसकी दया और अनुग्रह के साथ जोड़ा गया है जहाँ परमेश्वर ने मूसा से यह कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे सारी भलाई दिखाऊँगा . . . जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।" भजन 25:7 उसकी भलाई से बहते हुए परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात करता है, जब वह कहता है, "हे यहोवा, अपनी भलाई के कारण . . . [और] अपनी करूणा के अनुसार तू मुझे स्मरण कर।"

भजन 23:6; भजन 73:1; भजन 145:9, 15-16; और मरकुस 10:18 जैसे अन्य अनुच्छेद भी परमेश्वर की भलाई के प्रति विविध तरीकों को दर्शाते हैं। परंतु परमेश्वर की असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय भलाई का सबसे अधिक प्रत्यक्ष प्रदर्शन मसीह के लिए और उन सबके लिए जो मसीह में हैं, उसका अनंत प्रेम है। जैसा कि पौलुस इफ़िसियों 1:4-6 में लिखता है :

> [उसने] अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंतमेंत दिया। **(इफ़िसियों 1:4-6)**

जैसे कि इस पद का विस्तृत संदर्भ स्पष्ट करता है, हमारा लेपालक पुत्र होना प्रेम में था, अर्थात् परमेश्वर का वह प्रेम जो सृष्टि की रचना होने के पहले से हमारे लिए था। और अपने लोगों के लिए परमेश्वर का अनंत प्रेम मसीह में है, अर्थात् उसमें जिससे वह प्रेम करता है। उन लोगों के लिए परमेश्वर

का प्रेम जो मसीह में हैं, पिता के अपने पुत्र के प्रति असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय प्रेम पर आधारित है।

> बाइबल हमें अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम के बारे में बहुत कुछ बताती है। परमेश्वर हमसे कई तरीकों से प्रेम करता है, और वह हमारे प्रति अपने प्रेम को कई तरीकों से प्रकट करता है। फिर भी, बाइबल इस विषय में स्पष्ट है कि परमेश्वर निश्चित और परम रूप से हमारे प्रति अपने प्रेम को ऐसे दिखाता है कि वह अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए भेजता है। यूहन्ना 3:16 कहता है कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" तब परमेश्वर का प्रेम जगत के लिए अपने पुत्र को दे देने में सर्वोच्च रूप में प्रकट हुआ ताकि यह संसार बचाया जा सके। परंतु हमें वहीं नहीं रूकना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए उस कार्य को करने में प्रकट होता है जिसके लिए उसने अपने पुत्र को दे दिया। उसका पुत्र इसलिए आया कि हमारे पापों के लिए बलि हो जाए। वास्तव में, हम वे लोग नहीं हैं जिन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बनने हेतु भेज दिया . . .। अतः इससे हमें बहुत उत्साह मिलना चाहिए। वास्तव में, पौलुस रोमियों 8 में इसी बिंदु को लेता है और इन शब्दों के साथ हमें उत्साहित करता है, वह कहता है, "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परंतु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?" और इसलिए, परमेश्वर ने निर्णायक रूप से और मूलभूत रूप से , और अंतिम रूप से हमें उस तरीके को दिखाया है जिसमें वह अपने पुत्र को हमें देकर हमसे प्रेम करता है। अतः हमें उस पर भरोसा करना चाहिए और आश्वस्त हो जाना चाहिए कि वह वास्तव में हम से प्रेम करता है।— **Dr. Brandon D. Crowe**

- डॉ. ब्रेंडन डी. क्रो

दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की अप्रत्यक्ष भलाई पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर की भलाई के असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय चरित्र की ओर हमारे ध्यान को आकर्षित करता है। यहाँ हमारे मन में यह आश्वासन है कि परमेश्वर उन कष्टों और क्लेशों से भी भलाई उत्पन्न करेगा जो अस्थाई रूप से उसकी सृष्टि को पीड़ित करते हैं। परमेश्वर की भलाई में विश्वास करने की एक सबसे बड़ी चुनौती उसकी सृष्टि में बुराई की उपस्थिति है। परंतु बाइबल के लेखकों ने बल दिया है कि परमेश्वर की भलाई की सिद्धता बुराई से भलाई को उत्पन्न करेगी। उदाहरण के लिए, याकूब 1:17 हमें बताता है कि कठिन परीक्षाएँ हमारी भलाई के लिए हैं क्योंकि "हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है।" और जैसे कि पौलुस ने रोमियों 8:28 में रोमी मसीहियों को आश्वस्त किया, "हम जानते हैं जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं।"

परमेश्वर के अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय और भलाई के बाइबल आधारित दृष्टिकोणों को स्पर्श करने के बाद, अब हम परमेश्वर के सत्य की ओर आते हैं। यह वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी में उल्लिखित अंतिम कथनीय विशेषता है।

सत्य

बाइबल और सामान्य प्रकाशन दोनों इसे स्पष्ट करते हैं कि कई रूपों में सत्य एक कथनीय विशेषता है। परमेश्वर के विवेकपूर्ण और नैतिक रचित प्राणी सच्चे, ईमानदार, विश्वसनीय और विश्वासयोग्य हो सकते हैं। परमेश्वर के सत्य की अवधारणा क्रिया आमैन אָמַן)), जिसका अनुवाद अक्सर "निश्चित," "अभिपुष्ट," या "सत्य" के रूप में किया जाता है, से जुड़े इब्रानी शब्दों के समूह, और जाने-पहचाने शब्दखेसेद (חֶסֶד) , जिसका अनुवाद "विश्वासयोग्यता" या "करुणा" के रूप में किया जाता है, से ली गई है। यह अवधारणा नए नियम की यूनानी भाषा के शब्दोंआलेथेइया (ἀλήθεια) और पिस्टिस (πίστις) से भी आती है। बाइबल आधारित ये शब्द सत्यता, सच्चाई, विश्वसनीयता, और विश्वासयोग्यता को दर्शाते हैं। परमेश्वर के रचित प्राणी इन विशेषताओं को प्रकट कर सकते हैं, परंतु केवल सीमित, अस्थाई और परिवर्तनीय रूपों में। इसके विपरीत, परमेश्वर का सत्य असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है। पौलुस ने रोमियों 3:4 में परमेश्वर के सत्य की इस अतुलनीय विशेषता को दर्शाया जब उसने यह कहा :

> **परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे। (रोमियों 3:4)**

कुल मिलाकर, विधिवत धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की इस विशेषता को दो मुख्य तरीकों से प्रदर्शित किया है। परमेश्वर सत्य का विश्वासयोग्य स्रोत है, और वह अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है।

एक ओर, परमेश्वर की सत्य के विश्वासयोग्य स्रोत होने के रूप में प्रशंसा की जाती है। भजन 119:43 में भजनकार ने परमेश्वर के "सत्य वचन" के रूप में पवित्रशास्त्र के बारे में बात की। इसी भजन के पद 142 में उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ घोषणा की, "तेरी व्यवस्था सत्य है।" भजन 25:5 परमेश्वर से की गई प्रार्थना है कि "मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे।" यूहन्ना 8:32 में यीशु ने अपने शिष्यों के समक्ष स्पष्ट किया कि यदि तुम मेरी शिक्षा को थामे रहते हो तो तुम "सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। यूहन्ना 16:13 में मसीह ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की कि "सत्य का आत्मा . . . तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" और यूहन्ना 17:17 में यीशु ने पिता से यह प्रार्थना की, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है।" इन और अन्य रूपों में, पवित्रशास्त्र स्पष्ट कर देता है कि जब परमेश्वर सत्य को प्रकट करता है, तो यह पूरी तरह से विश्वसनीय होता है क्योंकि विश्वासयोग्य और सत्य होना ही उसका चरित्र है।

दूसरी ओर, परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति भी असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय रूप से सच्चा या विश्वासयोग्य है। परमेश्वर पर निर्भर रहा जा सकता है कि वह प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। अब, हमें यहाँ पर सावधान रहना होगा। कई बार पवित्रशास्त्र में जो परमेश्वर की ओर से एक प्रतिज्ञा के रूप में प्रतीत हो, वह वास्तव में अस्पष्ट शर्तों के साथ एक प्रस्ताव या एक चेतावनी हो सकती है। यदि अस्पष्ट शर्तें पूरी नहीं की जातीं, तो परमेश्वर का प्रस्ताव या चेतावनी पूरी नहीं होती। परंतु जैसे पौलुस ने तीतुस 1:2 में लिखा, "परमेश्वर . . . झूठ नहीं बोल सकता।" यदि परमेश्वर कोई प्रतिज्ञा करता है, तो वह उसे पूरी करेगा। गिनती 23:19; भजन 33:4; इब्रानियों 6:18 और अन्य कई अनुच्छेद परमेश्वर द्वारा सभी प्रतिज्ञाओं की विश्वासयोग्य पूर्णता को दर्शाते हैं। अतः इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रकाशितवाक्य 3:14 ऊँचे पर विराजमान मसीह का परिचय इस प्रकार देता है कि वह "विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है जो परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है।"

हमने उन बहुत सी बातों में से कुछ ही बातों का अध्ययन किया है जिन्हें परमेश्वर की धर्मशिक्षा के इस पहलु के बारे में कहा जा सकता है। परंतु जब हम परमेश्वर की अकथनीय सिद्धताओं के बारे में सीखते हैं तो हमें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जिनकी झलकियाँ वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी हमें बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की विशालता के विषय में देती है। जैसा कि हम देख चुके हैं, पवित्रशास्त्र

परमेश्वर को केवल कुछ ही रूपों में नहीं बल्कि प्रत्येक रूप में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय के रूप में प्रस्तुत करता है। उसके तत्व का प्रत्येक पहलू तुलना से परे है। और इस भाव में, परमेश्वर की प्रत्येक विशेषता एक अकथनीय विशेषता है।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने यह खोज की कि परमेश्वर कैसे अपनी सृष्टि से दो मुख्य रूपों में भिन्न है। पहला, हमने परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं की पहचान का अध्ययन किया। हमने उसकी सिद्धताओं को पहचानने की बाइबल आधारित नींव, इस क्षेत्र में सुसमाचारिक लोगों के बीच पाई जाने वाली धर्मवैज्ञानिक विविधता, और इन विशेषताओं को पहचानने के लिए आवश्यक बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की विशालता को देखा। हमने इन प्रक्रियाओं का अनुसरण करते समय बाइबल आधारित नींव, सुसमाचारिक लोगों के बीच धर्मवैज्ञानिक विविधता और बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के क्षेत्र पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के परमेश्वर की अन्य सिद्धताओं के साथ एकीकरण की जांच भी की।

अधिकतर, मसीह के अनुयायी परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के बारे में सावधानी से सोचने के महत्व को नहीं पहचानते। परंतु परमेश्वर के अपनी सृष्टि से भिन्न होने के तरीकों के बारे में हमारी धारणाएँ मसीही विश्वास के लिए इतनी महत्वपूर्ण है कि वे हमारी सभी धर्मशिक्षाओं, क्रियाओं और व्यवहारों पर प्रभाव डालती हैं। मसीही धर्मशिक्षाओं के बहुत से स्तम्भ परमेश्वर की अकथनीय सिद्धताओं की उचित समझ पर स्थित हैं। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियाँ भी इन सत्यों के द्वारा अगुवाई प्राप्त करती हैं। और परमेश्वर विज्ञान के इस पहलू के विषय में जो हम विश्वास करते हैं उसके द्वारा परमेश्वर के समक्ष हमारी नम्रता, आत्मविश्वास, आनंद, और आराधना के व्यवहार बड़ी गहनता से प्रभावित होते हैं। पवित्रशास्त्र द्वारा परमेश्वर की अकथनीय विशेषताओं के बारे में दी गई शिक्षा की समझ हमें मसीह में विश्वासयोग्य सेवा के प्रत्येक पहलू के लिए तैयार करती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।